www.thearyasamaj.org

ओ३म्

रजि. सं. MTR नं. 04/2016-18

नवम्बर 2016

अंक 10

तपोभूमि

मासिक

www.thearyasamaj.org

दीपावली पर विशेष

सम्पादकीय

सत्य सखा महर्षि दयानन्द सरस्वती

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म ऐसा प्रतीत होता है संसार में सत्य की स्थापना के लिए ही हुआ था। सारे ऐतिहासिक ग्रन्थों को पढ़जाइये, अनेकों महापुरुषों के जीवनों को पढ़जाइये, चाहे वे किसी देश व जाति में उत्पन्न हुये हों लेकिन स्वामी दयानन्द जैसा सत्याग्रही पुरुष मिलना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव है। हमारे कहने का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि सभी महापुरुषों ने सत्य के बारे में कुछ नहीं कहा, सभी महापुरुषों ने अपने जीवन में सत्य की महत्ता पर प्रकाश अवश्य डाला है। पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसा सत्य के प्रति समर्पित व्यक्ति मिलना दुर्लभ है। बाल्यकाल से ही वे सत्य के अन्वेषी रहे। अपने पूज्य पिता के विरुद्ध भी वे सत्य के कारण खड़े हो गये। जब उनके पिता ने शिवरात्रि का व्रत रखने के लिये उनसे कहा और शिव की महिमा का वर्णन किया जिसको सुनकर उन्होंने व्रत रखने का निश्चय कर लिया। लेकिन रात्रि में शिव की मूर्ति पर चढ़कर चूहे को मलमूत्र करते और प्रसाद खाते देखा तो उन्होंने अपने पिता को जगाकर शिवजी के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगा दिया। और अपने पिता से स्पष्ट कह दिया कि सच्चा शिव यह नहीं है इस पत्थर की मूर्ति को शंकर भगवान कहना सत्य नहीं है। तथा सच्चे शिव की खोज करने का वहीं से निश्चय कर लिया। गृह त्याग के बाद सत्य की खोज के लिये उन्होंने अथक प्रयास किया। उनकी यह दृढ़ धारणा थी कि समस्त संसार का कल्याण एक सत्य के कारण ही हो सकता है, अन्य कोई रास्ता नहीं है। संसार के बीच सत्य के पथ को अनेक प्रकार के मत मतान्तर रूपी झाड़-झंकार ने ढक लिया था। ऐसी विषम परिस्थिति में सत्य के गीत गाना तो बड़ा सरल था पर सत्य का पथ योजना दुरूह कार्य था। क्योंकि संसार में जितने भी उस समय पथ प्रदर्शक लोग थे वे स्वयं सत्य का नाम लेकर भी सत्य पथ से भ्रष्ट थे। उसका कारण उन सबका सत् साहित्य से अनभिज्ञ होना था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बड़े प्रयास से पाखण्डों मत-मतान्तरों जालग्रन्थों के बीच से आखिर सत्य का मार्ग खोज ही लिया। और संसार को उस सुगम पथ पर चलाने के लिये सत्य के पथ में आई बाधाओं को दूर करने का अविस्मरणीय कार्य किया। उनके मानस मे सत्य की महत्ता कितनी गहराई से बैठी हुई थी यह उनके द्वारा लिखित साहित्य और स्थापित संगठन की नियमावली से पता चलता है। सत्य के प्रचार-प्रसार के लिये स्थापित आर्य समाज के प्रथम पांच नियमों में उन्होंने सत्य को ही प्रधानता दी है। उनके द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ का नाम ही सत्यार्थ प्रकाश है। इसी ग्रन्थ की भूमिका में वे लिखते हैं कि **मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाशन करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।** इन वाक्यों में महर्षि ने सत्य के स्वरूप को जिस सरलता और निश्छलता से रखा है यह उनकी प्रबल सत्य निष्ठा का परिचायक है। इससे आगे सत्य से पतित व्यक्ति के मानसिक अवस्था का प्रकाश करते हुये लिखते हैं कि **जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य करने में प्रवृत्त होता है। इसलिये वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।**

संसार में व्यक्ति दुखों को दूर करने के लिये और आनन्द की प्राप्ति करने के लिये अनेक प्रकार की योजनायें बनाता है और उन योजनाओं को साकार करने के लिये अनेक प्रयत्न करता है। लेकिन हम संसार मे देखते हैं आनन्द प्राप्ति के सारे प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। हमारी सारी साधना किसी काम नहीं आती है। चाहे हम आनन्द के प्राप्ति के लिये भौतिक संसाधनों का कितना ही संग्रह करलें या आध्यात्मिकता के नाम पर कितना ही ढोल पीटलें। आनन्द के नाम पर हाथ कुछ नहीं लगता है। अन्त में व्यथित होकर व्यक्ति कह उठता है कि संसार में सब कुछ व्यर्थ है। सब छलावा है। नाना प्रकार से व्यक्ति सुख-शांति, आनन्द के नाम पर ठगा जाता है। ऐसी स्थिति में सामान्य जनों को निकालने के लिये विद्वानों को अपना दायित्व निर्वहन करना चाहिये। लेकिन विद्वान् स्वयं ही नहीं समझ पाता कि अशान्ति की आग में जलते हुये संसार को आखिर किस तरह बचाया जाये। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अनुभवों के आधार पर बताया है कि विद्वानों आप्त पुरुषों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित करदें पश्चात् वे स्वयं अपना हित अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। महर्षि के इन स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य शब्दों ने मानो आनन्द प्राप्ति का सुगम पथ सब कि लिये खोल दिया है। जो भी विद्वान या अल्पज्ञ इस बात को स्वीकार कर जीवन में अपनायेगा तब उसे पछाता करके कभी भी यह कहना नहीं पड़ेगा कि संसार छलावा है। सब कुछ दुखमय है। सत्य पथ का अवलम्बन करने वाला शान्ति को निश्चित रूप से प्राप्त करता ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का मानना है कि सत्य के जानने के लिये परमपिता परमात्मा हमारे अन्दर व्यापक होकर पथ प्रदर्शक बना रहता है। क्योंकि

-शेष पृष्ठ संख्या 35 पर

www.thearyasamaj.org

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–62 | संवत्सर 2073 | नवम्बर 2016 | अंक 10

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादकः
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

नवम्बर 2016

सृष्टि संवत्
1960853117

दयानन्दाब्दः 193

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा
(उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाषः
0565–2406431
मोबा. 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4
पुराणों को किसने बनाया ?	–डॉ0 श्रीराम आर्य	5–7
काम–वासना	–बाबू सूरजभान वकील	8–9
स्वास्थ्य, सफलता और शक्ति प्राप्त करने का गुप्त रहस्य	–बाबू दयाचन्द्र गोयलीय	10–13
ब्रह्मचर्य–विज्ञान	–जगननारायण देव	14–17
मनुष्य जीवन का साफल्य	–श्यामसुन्दरदास	18–21
उन्नत जीवन का उपदेश	–कविवर रामनरेश त्रिपाठी	22
देव दयानन्द	–ओंकारसिंह विभाकर	23
गोवर्धन–परिक्रमा	–देवनारायण भारद्वाज	24–28
माता शेरां वाली और भगवती जागरण	–स्वामी अखण्डमण्डनानन्द	29–32
समाचार		33–34

❁❁❁

वार्षिक शुल्क 150/–

पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

www.thearyasamaj.org

वेदवाणी

लेखकः डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अज का मोक्षपथारोहण

अजमनज्मि पयसा घृतेन दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तम्।
तेन गेष्म सुकृत्यस्य लोकं स्व रारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम्।। –अथर्व0 4.14.6

शब्दार्थ:–

मैं (दिव्यम्) दिव्य, (सुपर्णम्) शोभन पंखोंवाले, (पयसम्) पयस्वान्, दूध–भरे, (बृहन्तम्) विशाल (अजम्) अज को (पयसा घृतेन) दूध और घी से (अनज्मि) मलकर कान्तियुक्त करता हूँ। (तेन) उसके द्वारा, हम (सुकृतस्य लोकम्) सुकृत के लोक को (गेष्म) पहुँच जायें (उत्तमम्) उत्तम (स्वः) आनन्दमय (नाकम् अभि) मोक्षलोक के प्रति (आरोहन्तः) आरोहण करते हुए।

भावार्थ:–

मैं अज को दूध और घी से मलकर चिकना करता हूँ, परन्तु पहले अज का परिचय तो जान लें। लोक में अज का अर्थ बकरा होता है, पर मन्त्र में जो लक्षण इसके बताये गये हैं, उनके अनुसार यह बकरा सिद्ध नहीं होता। बकरा भूलोक में निवास करता है, यह अज दिव्य लोक का वासी है। बकरे के शरीर पर बाल होते हैं, इस अज के शरीर पर सुन्दर पंख हैं। बकरे के अन्दर दूध नहीं भरा होता है, अज के अन्दर दूध भरा है। 'पयसम्' में मतुबर्थक प्रत्यय का लुक् है। बकरा छोटे शरीर का होता है, अज बहुत विशाल है। यह भी विशेषता है कि इस अज को दूध और घी से मलकर चिकना या कान्तियुक्त किया जाता है। आशा यह की गयी है कि इस अज को साथ लेकर हम आनन्दमय लोक की सीढ़ी चढ़ते–चढ़ते सुकृत के लोक मोक्षधाम में पहुँच जायें। पहेली की सब सामग्री हमारे सम्मुख आ गयी, अब इसके आधार पर पहेली को हल करना है।

यह 'अज' दिव्य मन है। गत्यर्थक अज धातु से यह शब्द बना है। मन एक स्थान पर स्थित होता हुआ भी मनोवृत्तियों द्वारा दूर–दूर चला जाता है। इसी कारण इसे 'दूरंगम' कहा गया है। मन दिव्य भी होता है और सामान्य भी। यहाँ अज दिव्य मन है। वह 'सुपर्ण' इस कारण है क्योंकि शुभ विचारों के पंख, ऊँची–ऊँची सुन्दर उड़ानें उसकी होती है। उन उच्च विचारों से ही मनुष्य ऊँचा बनता है। उस दिव्य मनरूप अज के अन्दर दूध भरा हुआ है। यह दूध सात्त्विकता का दूध है। इस मनरूप अज को विशाल शक्ति से समन्वित होने के कारण विशाल कहा गया है। ऐसे दिव्य मनरूप अज को दूध और घी से मलकर कान्तियुक्त करने का क्या भाव हो सकता है? दूध सत्त्व गुण का और घृत दीप्ति का प्रतीक है। दिव्य मन रूप अज मैं पौनःपुन्य की रगड़ से सत्त्व गुण की प्रचुरता और दीप्ति का आधिक्य उत्पन्न करता हूँ। उस सात्त्विक इन्द्रिय एवं दिव्य मन रूप अज सहित जीवात्मा क्रमशः उच्च–उच्चतर और उच्चतम स्थिति में आरोहण करता हुआ आनन्दमय सुकृत के लोक मोक्षधाम में पहुँच जाता है। ❀❀❀

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

पुराणों को किसने बनाया?

लेखक: आचार्य डॉ0 श्रीराम आर्य

सौर पुराण के कर्त्ता का झगड़ा

देवी भागवत पुराण स्कन्द 1, अध्याय 3, श्लोक 15 में लिखा है–

"सौर पाराशर प्रोक्तं"

अर्थात्– सौर पुराण को पाराशर ऋषि ने कहा था जो व्यास जी के पिता थे, परन्तु सौर पुराण पर लिखा है–

"सौर पुराणं व्यासकृतम्"

अर्थात्– सौर पुराण पाराशर पुत्र व्यास जी ने बनाया है यह झगड़ा भी अन्य पुराणों के कर्ताओं के झगड़े के समान तय होना चाहिए कि सौर पुराण के वास्तविक बनाने वाले पाराशर जी ही थे या व्यास जी थे?

हमने पीछे दिखाया था कि–18 पुराणों को ब्रह्माजी द्वारा बनाया गया, ऐसा शिव पुराण में बताया गया है।

विष्णु पुराण में लिखा है कि–पाराशर जी ने पुराण बनाये हैं।

देवी भागवत पुराण–5–19–12 में लिखा है कि–पुराण अनेक धूर्तों ने बनाये हैं।

अन्य पुराणों में 18 पुराणों का कर्त्ता व्यास जी को बताया गया है और भविष्य पुराण ने अंगिरा, शुक्राचार्य, पाराशर, व्यास, मार्कण्डेय, तण्डि आदि ऋषि–मुनियों तथा ब्रह्माजी, शिवजी व विष्णु जी को पुराणों का रचयिता बताया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि –पुराणों का बनाने वाला कोई भी एक व्यक्ति नहीं रहा है, यह पुराणों के ही प्रमाणों से सिद्ध हो चुका है।

अतः किसी का भी यह दावा करना कि–

"पुराण वेदव्यास जी महाराज के बनाये हुए हैं, एकदम गलत है।"

भागवत पुराण को दैत्य गुरू शुक्राचार्य कृत बताकर उसकी प्रमाणिकता पर भविष्य पुराणकार ने एक भीषण प्रहार किया है।

भागवत में श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज के निर्मल चरित्र पर जो गोपियों के साथ दुराचार के लांछन लगाये गये हैं तथा कृष्ण को **'सुरतनाथ'** अर्थात् सम्भोग का पति बताकर बदनाम किया गया है।

www.thearyasamaj.org

देखिये-भागवत पुराण 10-32-2 पण्डित ज्वालाप्रसाद का भाष्य, बम्बई छापा, उसे देखकर यह बात कुछ जंचती भी है कि संस्कृतज्ञ दैत्य शुक्राचार्य ही उसके बनाने वाले होंगे।

अन्यथा कृष्ण के निर्मल चरित्र पर लांछन लगाने वाली मिथ्या कहानियाँ गढ़ने व ऐसा पुराण बनाने का साहस किसी वैष्णव व्यास जी में तो हो ही नहीं सकता था।

कुछ पौराणिक विद्वानों को वेद के निम्न दो स्थानों में **'पुराण'** शब्द देखकर इन्हीं 18 पुराणों के वर्णन का भ्रम हो जाया करता है।

वेद में पुराण शब्द

ऋचः समानि छन्दांशि पुराण यजुषां सह। -(अथर्ववेद 11-7-24)

इसमें पुराण का अर्थ सृष्टि विद्या सम्बन्धी मन्त्र है। **'यजुषांसह'** का अर्थ **'कर्मकाण्ड सम्बन्धी मन्त्रों के साथ'** यह अर्थ होगा।

यत्र स्कम्भः प्रजनयन् पुराण व्यवर्तयत्। -(अथर्ववेद 10-2-36)

इस मन्त्र में **'पुराण'** का अर्थ **'सृष्टि'** होगा।

'पुराण-पुरानव भवति' अर्थात् पुरानी होकर नई होती है। अतः **'सृष्टि'** को **'पुराण'** कहते है। इस मन्त्र में **'स्कम्भ'** के एक अंग को पुराण कहा गया है।

यदि वेद में सनातनी पण्डितों को राम-कृष्ण-सीता शब्द कहीं दीख पड़ते हैं तो वे लोग वेद में दशरथ पुत्र रामचन्द्र, वासुदेव पुत्र श्रीकृष्ण एवं जनकनन्दिनी सीता का इतिहास मानने लगते हैं।

इसी प्रकार यदि मुसलमान को **'शत मदीना'** पद वेद में मिल जाता है तो उसे मक्का मदीना का स्वप्न आने लगता है।

इसी प्रकार वेद में पुराण शब्द मिल जाने पर सनातनियों को 18 पुराणों का उल्लेख दीखने लगा है।

वेदों का प्रादुर्भाव सृष्टि के प्रारम्भ में लगभग दो अरब वर्ष पूर्व हुआ था जब पुराणों की रचनाकाल भारत में अंग्रेजी शासनकाल तक है। फिर भी इन बुद्धि के भण्डार पौराणिक विद्वानों को वेदों में 18 पुराणों का उल्लेख समझ में आता है। इनकी बुद्धि की बलिहारी है।

पुराणों के बनाने का उद्देश्य भी पुराणों ने इस प्रकार बतलाया है देखिये-

पुराण बनाने का उद्देश्य क्या था?

स्त्री शूद्र द्विज बन्धूनां न वेद श्रवणमतम्।
तेषामेव हितार्थाय पुराणानि कृतानि च।। 21।।

अर्थ- स्त्री, शूद्र व चाण्डालों के लिये क्योंकि वेद सुनने की आज्ञा सनातनधर्म में नहीं है। अतः उनके कल्याण के लिये ही पुराणों की रचना की गई है।

विशेषतश्च शूद्राणां पावनानि मनीषिभिः।। 54।।

www.thearyasamaj.org

अष्टादश पुराणानि चरितं राघवस्य च।। 55।।

-(भविष्य पुराण ब्रह्म पर्व अध्याय 1)

अर्थ– विशेषकर शूद्रों को पवित्र करने के लिए 18 पुराण और रामायण की रचना की गई है।

दैनिक व्यवहार में भी हम प्रायः देखते हैं कि पढ़े लिखे लोगों, शूद्रों एवं स्त्रियों को ठगने खाने के लिये पौराणिक पण्डित वर्ग रामायण तथा पुराणों की कथायें किया करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि इनको ही ठगने के लिये इन पुराणों की रचना की गई थी। यह बात तो निश्चित है कि इन पुराणों की उटपटाँग बातों का शिक्षित जनता पर तो कोई प्रभाव पड़ नहीं सकता। हाँ! अशिक्षित वर्ग पर ही पुराणों के नाम पर सनातन धर्म का जादू सवार है।

यदि जनता पुराणों की वास्तविकता को समझ ले तो सारा उनका बालू की भीत पर खड़ा पौराणिक धर्म एक ही प्रहार में विनष्ट हो जायेगा।

हमने इस पुस्तक में पुराणों की स्थिति पर संक्षेप में प्रकाश गत पृष्ठों में डाला है। आशा है पाठक उसे ध्यानपूर्वक देखेंगे व पुराणों के नाम पर जनता में फैलाये जाने वाले भ्रम के निवारण के लिये प्रयास करेंगे तथा जनता को बतलावेंगे कि पुराणों का शास्त्रीय दृष्टि से कोई महत्व नहीं है।

पुराणों की रचना साम्प्रदायिक लोगों द्वारा अपने मतों के समर्थन में जनता को गुमराह करने के लिये की गई थी। पुराणों की रचना भारत के गुप्तकाल से लेकर अंग्रेजों के शासनकाल तक चलती रही है और सभी पुराणों में विषय की दृष्टि से एकरूपता बनाये रखने के लिये निरन्तर कमीबेशी की जा रही है।

आज भी पुराणों के भिन्न-भिन्न संस्करणों में श्लोकों की संख्या में भारी अन्तर दिखाई देता है, महाभारत कालीन श्री वेदव्यासजी से उनकी रचना का कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।

वर्तमान पुराणों ने सारे ही ऋषि-मुनि एवं महात्माओं को कलंकित कियाहै, साथ ही सनातनी कल्पित देवताओं को छली-कपटी, परनारी लम्पट एवं दुष्ट बतलाया है।

आधे से अधिक अर्थात् 18 में से 10 पुराण तामसी बतलाये गये हैं उनके बहिष्कार का आदेश भी दिया गया है और बतलाया गया है कि वे नरक में ले जाने वाले हैं। पता नहीं इन नरक में ले जाने वाले मनहूस पुराणों की रचना ही क्यों की गई?

बेसिर-पैर वाले ऐसे खराब पुराणों का छापना व प्रचार आदि पौराणिक लोग क्यों करते हैं? नरक में ले जाने वाले पुराणों को तो बोरों में भरकर गहरे समुद्र में डुबो देना चाहिये।

पुराणों में अंग्रेजों के भारत में शासनकाल तक का उल्लेख है पर भारत की आजादी एवं हमारे बलिदानियों व निर्भीक सरदार पटेल जैसे व्यक्तियों एवं 600 रियासतों के विलय, पाकिस्तान निर्माण एवं पाकिस्तान में हिन्दुओं के विध्वंस का कोई उल्लेख क्यों नहीं है? यदि ये भविष्य वाणियां मानी जायें तो इधर की सभी बातों का उल्लेख होना भी आवश्यकीय था।

जैन व बौद्ध धर्मों का उल्लेख लगभग सारे ही पुराणों में आता है। जिससे स्पष्ट है कि पुराणों का निर्माणकाल जैन व बौद्धकाल के आरम्भ के बाद से अंग्रेजी साम्राज्य की भारत में स्थापना तक का है उनमें साम्प्रदायिक विद्वेष भरा पड़ा है। जो उनके भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिकों द्वारा बताने का संकेत करता है। ❁

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

काम–वासना

लेखकः बाबू सूरजभान वकील

इन सब बातों के अतिरिक्त एक पुरुष की अनेक स्त्रियाँ होने से उनमें कलह और मनमुटाव भी बहुत ज्यादा रहता है और उनकी सौतेली संतान तो प्रायः लड़ लड़कर ही मरती है। इसलिए एक पुरुष की अनेक स्त्रियाँ होना अनुचित है। जिस प्रकार स्त्री का एक पति के सिवा स्वप्न में भी दूसरे पुरुष को ख्याल में लाने का अधिकार नहीं है, उसी प्रकार पुरुष को भी एक स्त्री के सिवा दूसरी स्त्री का ख्याल दिल में लाने का अधिकार न होना चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मनुष्यों ने इस विषय में पहले की अपेक्षा बहुत उन्नति कर ली है और अब बहुधा एक स्त्री रखना ही पसन्द किया जाने लगा है; परन्तु अब भी इतनी कसर अवश्य बाकी है कि जिस प्रकार एक स्त्री दो पति रखने का ख्याल करने से ही महान् पापिनी समझी जाती है उसी प्रकार पुरुष दोषी नहीं समझा जाता है। यही कारण है कि आजकल भी अनेक पुरुष एकाधिक स्त्रियों से विवाह कर लेते हैं और इस प्रकार वे एक पत्नीव्रत को भंग करते हैं। अतएव स्त्रियों के समान पुरुषों के लिए भी ऐसा ही कड़ा नियम बनाने की आवश्यकता है, जिससे वे एकाधिक स्त्री न रख सकें और एक पत्नीव्रत को निबाहें। इसी से दाम्पत्यप्रेम की उन्नति हो सकती है और सामाजिक शान्ति बढ़ सकती है।

(4) भारतवर्ष की उच्च जातियों ने अपनी जबरदस्ती से यह उल्टी और एकपक्षी रीति जारी कर रक्खी है कि पुरुष चाहे सैकड़ों विवाह कर ले, एक अथवा अधिक स्त्रियों के मौजूद रहने पर भी नित्य नई–नई स्त्रियों ला लाकर घर भरे, परन्तु स्त्री अपने पति के मर जाने पर भी दूसरा पति न करने पावे। इसका भयंकर परिणाम यह हुआ है कि देश में लाखों–करोड़ों विधवायें हो गई हैं, जिनमें से अधिकांश ऐसी हैं कि वे पूर्णरूप से अपने ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकती हैं। इसलिए वे स्वयं व्यभिचारिणी बनती हैं और पुरुषों को व्यभिचारी बनाती हैं। इस तरह व्यभिचारी खूब वृद्धि होती है। विधवाओं की देखादेखी सधवायें भी व्यभिचारिणी बन जाती हैं और अनेक अनर्थों का कारण बनती हैं। इसके सिवा जब इन विधवाओं के गर्भ रह जाते हैं तब वे लोक–लाज के कारण गर्भपात करे भ्रूणहत्या जैसे भयंकर पाप करती हैं। ऐसे–ऐसे दुष्कृत्य करने से उनका हृदय महान् कठोर बन जाता है जिससे वे और भी ऐसे अनेक दुष्कर्मों में प्रवृत्त हो जाती हैं। किसी विधवा के गर्भ रह जाने पर उसके धर के सब आदमी इस बदनामी से बचने के लिए गर्भ गिराने में उसे सहायता पहुँचाते हैं। अतः जिस विधवा को एक बार गर्भ गिराने का अवसर मिल जाता है या जिसकी एक बार कुछ बदनामी फैल जाती है वह खुल्लमखुल्ला व्यभिचारिणी बन जाती है। उसकी देखादेखी घर की अन्य स्त्रियाँ भी ऐसा साहस करने लगती हैं और कुमार्ग की ओर कदम बढ़ाती

www.thearyasamaj.org

हैं। ऐसा होने से घर का सब प्रबन्ध बिगड़ जाता है और खराबी होने लगती है।

विधवाओं का दूसरा विवाह न होने के कारण एक और बड़ी खराबी होती है। संसार में स्त्री पुरुष प्रायः समान संख्या में उत्पन्न हुआ करते हैं, अर्थात् कुंवारी लड़कियाँ भी उतनी ही होती हैं जितने कि कुंवारे लड़के। अगर ये सब कंवारी कन्यायें कुंवारे लड़कों को व्याह दी जायँ तो रँडुए खाली रह जाते हैं और वे विधवाओं को व्यभिचारिणी बनाने के लिए बड़ी-बड़ी कोशिशें करते हैं। यदि कोई विधवा हाथ नहीं आती है तो वे सधवाओं को ही बहकाते हैं और इस प्रकार अनेक प्रकार के उत्पात मचाते हैं। यदि वे कुंवारी कन्यायें इन रँडुओं को व्याह दी जाती हैं तो उतने ही कुंवारे लड़के सदा के लिए बिना ब्याहे रह जाते हैं और वे भी जवान होकर इसी प्रकार खराबी करते हैं। रँडुओं का विवाह हो जाने की हालत में एक खराबी यह होती है कि रँडुए तो बड़ी उम्र के होते हैं और उनके साथ ब्याही जाने वाली कुंवारी कन्यायें बहुत छोटी उम्र की होती हैं, इस कारण उनका जोड़ा ठीक नहीं मिलता है और ऐसे अनमेल विवाह से सुफल फलने की आशा बहुत कम रहती है। बुडढों की नवविवाहिता स्त्रियाँ उनकी पोतियों के बराबर होती हैं। भला ऐसे पितृतुल्य पतिराज पर उनकी प्रीति कैसे हो सकती है और किस प्रकार वे अपने धर्म को निभा सकती हैं। मतलब यह है कि विधवाओं का विवाह न होने से बहुत अव्यवस्था हो गई है, मनुष्य जाति के सुख-शांति के अनेक नियम टूट गये हैं और इस प्रकार अशान्ति का विस्तार होकर सारा कारबार तितर-बितर हो गया है।

इन सब बुराइयों को दूर करने और व्यभिचार को रोकने के लिए विधवा-विवाह का जारी होना बहुत जरूरी है। ऐसा होने से रँडुए और कुंवारे सभी अपनी-अपनी योग्यता की विधवाओं से विवाह कर सकेंगे। कोई अनब्याहा न रहने पावेगा और सब स्त्री पुरुष अपनी अपनी राह पर चलकर संसार की सुख शांति बढ़ावेंगे। यदि किसी धार्मिक आज्ञा के कारण ये सब बुराइयाँ सहना ही मंजूर हों तो वही धार्मिक आज्ञा पुरुषों पर भी चलानी चाहिए, अर्थात् स्त्रियों की तरह उनका भी दुबारा विवाह होना पापजनक ठहराकर बंद कर देना चाहिए। इससे कम से कम इतना फायदा तो अवश्य होगा कि कुंवारी कन्यायें रँडुओं को न ब्याही जाकर कुंवारों को ही ब्याही जाया करेंगी, बूढ़े बाबा भी अपनी पोतियों के समान छोटी-छोटी छोकरियों को ब्याह कर उच्च जाति के मुंह में कालिमा न पोत सकेंगे और न विवाह के दूसरे दिन ही बुडढे बाबा की अर्थी निकल कर उसकी नई दुलहिन सदा के लिए विधवा ही बना करेंगी। ❁❁❁

पाठकों से नम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के उन पाठकों से निवेदन है जिन्होंने वर्ष 2015 का शुल्क अभी तक जमा नहीं कराया है वे वर्ष 2016 के वार्षिक शुल्क के साथ शीघ्र ही **'सत्य प्रकाशन'** कार्यालय को जमा करायें ताकि पत्रिका व विशेषांक सुचारू रूप से आपको प्राप्त होते रहें। इस वर्ष का विशेषांक **"भारत और मूर्तिपूजा"** छपकर तैयार हो रहा है बहुत जल्दी ही आपके हाथों में होगा। **आप यथाशीघ्र बकाया शुल्क भिजवायें।** **-व्यवस्थापक तपोभूमि मासिक**

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

स्वास्थ्य, सफलता और शक्ति प्राप्त करने का गुप्त रहस्य

लेखकः– बाबू दयाचन्द्र गोयलीय

मैं एक स्त्री को जानता हूँ कि जिसे अनेक प्रकार के सुख प्राप्त हैं। थोड़े दिन हुए मेरे एक मित्र ने उससे कहा कि अहा, तुम कैसी भाग्यवान् हो। तुम्हें केवल इच्छा करने की देर रहती है। इच्छा करते ही तुम्हें वस्तु की प्राप्ति हो जाती है। निःसन्देह देखने में तो ऐसा ही मालूम होता है, परन्तु वास्तव में जो सुख उसे प्राप्त है वह सब उसके मानसिक सुख का परिणाम है कि जिसके लिये वह शुरू से उद्योग कर रही है। जबसे उसे ज्ञात हुआ है, वह बराबर अपने मन को सधाने और अपनी आत्मा को पवित्र करने के प्रयत्न में लगी हुई है। केवल चाहने से या किसी चीज की इच्छा करने से तो सिवाय निराश के और कुछ नहीं मिलता। हाँ यदि कुछ मिलता है तो उत्तम जीवन व्यतीत करने से। उत्तम जीवन का ही कुछ प्रभाव पड़ता है। मूर्ख लोग केवल इच्छा करते रहते हैं और जब उन्हें कुछ नहीं मिलता तो वे बड़बड़ाने लगते हैं, परन्तु बुद्धिमान पुरुष काम करते हैं और फल की प्रतीक्षा करते हैं। उक्त स्त्री ने जो कुछ भी प्राप्त किया था, वह सब अपने उद्योग द्वारा। उसने अपने अंतरंग को सुधारा था, अपने मन को सधाया था और अपनी आत्मा को विशुद्ध बनाया था। उसने अपनी आत्मा के असाधारण और अदृश्य हाथों से आशा, विश्वास, प्रेम, आनन्द और भक्ति के बहुमूल्य हीरों के प्रकाश का एक सुन्दर और रमणीक मंदिर बनाया था जिसकी प्रकाशमान किरणें सदैव उसके चहुँओर फैली रहती थीं। वे किरणें उसकी आँखों में चमकती थीं, उसकी आकृति से प्रगट होती थीं, उसके शब्दों में थर–थर करती थीं और जो लोग उसके सामने आते थे उन पर उन किरणों का जादू जैसा असर पड़ता था और वे सब उसके भक्त होते जाते थे।

जैसा उक्त स्त्री का हाल है, वैसा ही तुम्हारा है। तुम्हारी सफलता, तुम्हारी असफलता, तुम्हारा प्रभाव और तुम्हारे जीवन के सम्पूर्ण कार्य तुम्हारी अवस्था में इस बात के साक्षी हैं कि तुम्हारे मन में किस प्रकार के विचारों का असर है। यदि तुम प्रेम, पवित्रता और आनन्द के विचारों को प्रकाशित करोगे, तो तुम्हें सुख और ऐश्वर्य प्राप्त होगा और शांति मिलेगी। इसके विपरीत यदि तुम घृणा, द्वेष, अपवित्रता और अप्रसन्नता के विचारों का प्रकाश करोगे तो सब कोई तुम्हारी निंदा करेंगे और तुम सर्दव भय और चिंता में ग्रसित रहोगे। तुम स्वयं अपने अच्छे व बुरे भाग्य के बनानेवले हो। प्रतिक्षण तुम्हीं से ऐसे भाव व विचार प्रगट होते रहते हैं कि जिनसे तुम्हारा जीवन सुधरता है या बिगड़ता है। अपने हृदय को उदार, निःस्वार्थ और प्रेममय बनाओ, उससे तुम्हारा प्रभाव अधिक होगा और तुम्हें स्थाई सफलता प्राप्त होगी, चाहे तुम्हारे पास धन कुछ भी न हो। परन्तु इसके विपरीत यदि तुम अपने को स्वार्थ की चारदीवारी के भीतर बंद रक्खोगे, तो चाहे तुम लखपति व करोड़पति क्यों न हो, तुम्हारा प्रभाव कुछ भी नहीं होगा और न तुम्हें कुछ सफलता प्राप्त होगी।

www.thearyasamaj.org

अतएव तुम अपने में इस पवित्र और निःस्वार्थ भाव को उत्पन्न करो और विश्वास और पवित्रता से काम करने के अतिरिक्त अपने शुभ संकल्प में दृढ़ रहो। ऐसा करने पर तुम्हारे मन में ऐसी बातें उपजेंगी और ऐसे भाव प्रगट होंगे कि जिनसे तुम्हें केवल उत्तम स्वास्थ्य और स्थाई सफलता ही प्राप्त नहीं होगी, किन्तु तुम्हारा बल और प्रभाव भी बढ़ेगा।

चाहे तुम अपनी वर्तमान अवस्था से अप्रसन्न हो और तुम्हारा जी काम में न लगता हो, तो भी तुम जहाँ तक हो सके अपने कर्तव्य का श्रम और साहस से पालन किये जाओ और अपने मन में यह विश्वास रक्खो कि इससे अच्छी अवस्था और अच्छे अवसर तुम्हारी बाट जोह रहे हैं। सदा नई निकलने वाली सूरतों की जोह में रहो कि जिससे जब कभी अवसर मिले और नया मार्ग दिखलाई दे, तौ झट तुम उस पर लग जाओ और बुद्धिमानी, सावधानी और दूरदर्शिता से काम करने के लिये तैयार होकर इस नये काम में तन-मन से उद्योग करने लगो।

चाहे तुम्हारा काम कुछ हो, तुम उसको तन-मन-धन से एकाग्रचित्त होकर करो और अपनी ओर से कोई भी कसर उठा न रक्खो। यदि तुम छोटे-छोटे कामों को पूरी तौर से कर लोगे तो बड़े-बड़े काम भी अवश्य कर सकोगे। इस बात का सदैव ध्यान रक्खो कि धीरे-धीरे उन्नति करते हुए ऊपर चढ़ो। ऐसा करने से तुम कदापि नीचे नहीं गिर सकोगे। वास्तविक शक्ति के प्राप्त करने का यही मार्ग है। निरंतर इस बात का स्मरण रक्खो कि तुम अपनी योग्यता से कैसी उत्तमता से काम ले सकते हो और उसे जब चाहे किसी काम में लगा सकते हो। मूर्ख मनुष्य अपनी सम्पूर्ण मानसिक और आत्मिक शक्ति को छिछोरपन, व्यर्थ की बकवाद, और स्वार्थयुक्त बातों में नष्ट कर देते हैं और साथ में बुरे कामों के करने से अपनी शारीरिक शक्ति को भी नष्ट करते रहते हैं।

यदि तुम प्रबल शक्ति प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हें शांति धैर्य और गम्भीरता से काम लेना चाहिये। तुम्हें स्वयं अपने पैरों से खड़ा होना सीखना चाहिये। दूसरों की सहायता के भूखे मत रहो, सम्पूर्ण शक्ति स्थिरता और दृढ़ता से सम्बन्ध रखती है। देखो चट्टान, पहाड़ और बलूत के पेड़ से जिसने बड़ी-बड़ी आँधियों को सहन कर लिया है शक्ति प्रगट होती है, कारण कि इनमें से हर एक भारी और बलवान है और अपने स्थान पर इस प्रकार स्थिर है कि कोई हिला नहीं सकता। परन्तु इसके विपरीत उड़ती हुई रेत, झुकती हुई टहनी, और हिलती हुई किल्क (नरकुल) से निर्बलता प्रगट होती है कारण कि ये सब हिलने वाली चीजें हैं और विरोधी शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकतीं और जब अपने साथियों से पृथक हो जाती हैं उस समय किसी भी काम की नहीं रहतीं। अर्थात् रेत का एक कण पेड़ को एक टहनी और किल्क का एक सरकंडा स्वयमेव कुछ भी शक्ति नहीं रखता। वास्तव में वही मनुष्य बलवान है कि जो अपने साथियों के किसी न किसी प्रकार की वासना में ग्रसित हो जाने पर भी स्वयं शांत गम्भीर और स्थिर रहता है।

वही मनुष्य दूसरों पर शासन कर सकता है और उनको अपने वश में रख सकता है कि जिसने स्वयं अपने को वश में कर लिया हो। जो लोग सिड़ी और दीवाने हैं, कायर और डरपोक हैं और विचार

www.thearyasamaj.org

शून्य हैं और जिनमें बुद्धि और गम्भीरता नहीं है, उनको चाहिये कि वे और लोगों के साथ रहें, नहीं तो निर्बल और असहाय होकर गिर पड़ेंगे, परन्तु जो मनुष्य शांत, गम्भीर, निर्भीक, बुद्धिमान और दूरदर्शी हैं, उन्हें चाहिये कि अकेले जंगल, और पहाड़ों में चले जाएँ। ईश्वर उनकी शक्ति को और भी अधिक बढ़ा देगा और वे उन भयंकर मानसिक लहरों और भँवर से जो मनुष्य को विपत्ति के समुद्र में गिरा देती हैं, बचकर निकल जाएँगे।

वासना में शक्ति नहीं है। इससे तो शक्ति का दुरुपयोग होता है और विनाश भी होता है। वासना एक तेज आँधी के समान है कि जो मजबूत चट्टानों की दीवार से जोर से टक्करें मारती रहती है और शक्ति चट्टान के सदृश है कि जो आँधी में चुपचाप और निष्क्रिय रहती है। एक बार मार्टिन लूथर को उसके मित्रों ने वर्म्स नामक स्थान में जाने से मना किया और उसका कारण यह था, कि उन्हें इस बात का भय था कि यदि वह वहाँ पर जाएगा तो मारा जाएगा। इसके उत्तर में लूथर ने कहा कि चाहे वहाँ मेरे कितने ही शत्रु हों, परन्तु वहाँ मैं अवश्य जाऊँगा। इसका नाम सच्ची शक्ति है। इसी प्रकार जब बेंजमिन डिजरेली पहले पहल पार्लियामेंट में वक्तृता देने के लिये खड़े हुए और बोल न सके और उसके कारण पार्लियामेंट में उनकी हँसी हुई। तो उस समय जो कुछ उन्होंने कहा था उससे उनकी वास्तविक अन्तरंग शक्ति का प्रकाश होता है। उनके शब्द ये थे कि "एक दिन ऐसा आएगा कि जब तुम मेरी वक्तृता को ध्यान से सुनना अपने लिए अभिमान का कारण समझोगे।"

एक नवयुवक के विषय में ज्ञात है कि वह लगातार विपत्तियों पर विपत्तियाँ सहता था और उसे प्रत्येक कार्य में असफलता होती थी। उसके मित्र उसे यह कह कर चिढ़ाते थे कि अब तुम उद्योग करना छोड़ दो, तुम्हें सफलता नहीं हो सकती। इसके उत्तर में नवयुवक कहता था कि वह समय दूर नहीं है किन्तु बहुत ही निकट है, कि जब तुम मेरी सफलता और सौभाग्य पर आश्चर्य करोगे। वास्तव में उसने सिद्ध कर दिया कि उसके भीतर वह गुप्त और अजेय शक्ति विद्यमान है कि जिसके कारण उसने अगणित कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की और उसे अपने जीवन में पूर्ण सफलता हुई।

यदि तुम में यह शक्ति नहीं है तो तुम अभ्यास से इसको प्राप्त कर सकते हो। जबसे शक्ति का प्रारम्भ होता है तभी से बुद्धिमानी का प्रारम्भ होता है। तुम्हें चाहिये कि पहले तुम उन छोटी-छोटी बातों को अपने वश में करो कि जिनके तुम स्वयं अभी तक अपनी इच्छा से वश में हो रहे हो। खिलखिला कर मुँह फाड़कर हँसना, व्यर्थ की बातें करना, दूसरों की हँसी उड़ाना और केवल हास्य के लिये हँस ठट्टा करना, इन सब बातों को छोड़ना चाहिये। इन से समय को नष्ट करने के सिवाय और कोई लाभ नहीं है। इसीलिये सेंटपाल ने एशिया माइनर में एफीसेज के लोगों को मूर्खता की बातें न करने और हँसी ठट्ठा न करने का उपदेश दिया था। उन्होंने कहा था कि ऐसा करने से सम्पूर्ण आत्मिक बल और जीवन नष्ट हो जाता है। जितना तुम अपनी मानसिक शक्तियों को इस प्रकार नष्ट होने से बचाओगे, उतना ही तुम्हें इस बात का ज्ञान होगा कि वास्तविक शक्ति क्या है। फिर तुम अपनी उन इच्छाओं और वासनाओं पर विजय

www.thearyasamaj.org

प्राप्त कर लोगे कि जिन्होंने तुम्हारी आत्मा को अपना दास बना रक्खा है और जो तुम्हारी आत्मा को अपना दास बना रक्खा है और जो तुम्हारी उन्नति में बाधक है। तत्पश्चात् तुम स्पष्ट रूप से उन्नति कर सकोगे।

सबसे बढ़कर यह बात है कि अपना एक उद्देश्य बनाओ जो उत्तम और उपयोगी हो और उसकी पूर्ति करने में तन मन में लग जाओ। चाहे कैसी ही विपत्ति आए और कैसी ही कठिनाई उपस्थित हो, परन्तु अपने निश्चित उद्देश्य से पीछे मत हटो। याद रक्खो, जिस मनुष्य का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं होता, उसे किसी काम में भी सफलता नहीं हो सकती। सीखने के लिये तो हर समय तैयार रहो, परन्तु माँगने के लिये कभी हाथ मत बढ़ाओ। अपने काम को अच्छी तरह समझ लो और स्वयं काम करो। जितना तुम अपनी अंतरात्मा के अनुसार काम करोगे और विवेक शक्ति से काम लोगे उतनी ही तुम्हें सफलता प्राप्त होगी और तुम उन्नति करते-करते उच्च स्थान पर पहुँच जाओगे और तुम्हारे उदार विचारों के द्वारा जीवन का वास्तविक सौंदर्य और उद्देश्य तुम पर धीरे-धीरे प्रगट हो जायगा। अपने आप को विशुद्ध और पवित्र रखने से तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, सम्यक् श्रद्धान और दृढ़ विश्वास रखने से तुम्हें सफलता प्राप्त होगी और अपने मन को अपने वश में करने से तुम में बल और शक्ति आ जाएगी। और जो कुछ भी तुम काम करोगे उसमें तुम्हारी जय होगी। यदि तुम अपनी इन्द्रियों के दास नहीं बनोगे, तो तुम ईश्वरीय नियम के अनुसार काम करोगे ओर इस दशा में जो कुछ भी तुम स्वास्थ्य या सफलता का लाभ करोगे वह स्थाई होगा, उसका कभी विनाश नहीं होगा और तुम्हारा बल और प्रभाव दिन-दिन बढ़ता जायगा।

अतएव स्वास्थ्य का मूल साधन यह है कि अपने मन को अपने वश में करो और अपने हृदय को विशुद्ध बनाओ। सफलता के लिये दृढ़ विश्वास, सम्यक् श्रद्धान् और निश्चित उद्देश्य रक्खो और शक्ति की प्राप्ति के लिये इस बात को आवश्यकता है कि दृढ़ संकल्प करके इच्छा और वासना का काला मुँह कर दो।❋

सत्य प्रकाशन के पुनः प्रकाशित उपलब्ध प्रकाशन

शुद्ध रामायण सजिल्द	मूल्य 220)	भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	मूल्य 20)
शुद्ध रामायण अजिल्द	मूल्य 170)	दयानन्द और विवेकानन्द	मूल्य 15)
शुद्ध हनुमच्चरित	मूल्य 60)	बाल मनुस्मृति	मूल्य 12)
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	मूल्य 40)	इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ	मूल्य 12)
यज्ञमय जीवन	मूल्य 30)	ओंकार उपासना	मूल्य 12)
मील का पत्थर	मूल्य 20)	दादी पोती की बातें	मूल्य 10)
भ्रांति दर्शन	मूल्य 20)		
चार मित्रों की बातें	मूल्य 20)		

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

ब्रह्मचर्य–विज्ञान

लेखकः–जगन्नारायणदेव शर्मा

ब्रह्मचर्य–सूक्त

(12)

अभिक्रन्दन् स्तनयन्नरुणः शितिंगो बृहच्छेपोऽनुभूमौ जभार।
ब्रह्मचारी सिंचति सानौरेतः पृथिव्यां तेन जीवन्ति प्रदिशंचतस्र।।

(1) घोर गर्जना करता हुआ, भूरा और साँवला तथा बड़े आकार वाला मेघ भूमि का पोषण करता है। (2) अपने रेतस से पृथिवी और पर्वत को सींचता है। (3) उससे चारों दिशायें जीवित होती हैं।

(1) उच्च स्वर से संसार को सचेत करता हुआ, जाज्वल्य–स्वरूप वाला तथा हृष्ट–पुष्ट अंगों–पांगों वाला ब्रह्मचारी संसार का पालन करता है।

(2) वह बड़े से लेकर छोटे तक, सब के हित का उपदेश देता है। अर्थात् वह समदृष्टि होता है।

(3) और उसके उपदेश से चारों ओर लोगों में जीवन पड़ जाता है। अर्थात् सर्वत्र जागृति उत्पन्न होती है।

इस मंत्र में ब्रह्मचारी को मेघ बनाकर, उससे उसके कार्यों की तुलना की गई है।

जैसे मेघ भीमनाद करता है, वैसे वेद–घोष करने वाला ब्रह्मचारी भी ओजस्वी व्याख्यान देता है। मेघ के स्वरूप में जो सुन्दरता है, वह उसमें भी है। मेघ जैसे बृहत्काय है, वैसे यह भी हृष्ट–पुष्ट शरीर वाला होता है। वह पृथिवी का पोषण करता है, यह भी जनता का सुधार करता है। वह अपना जल पर्वत से पृथिवी पर्यन्त बरसाता है। यह भी अपना ज्ञानोपदेश, बड़े–छोटे का भेद–भाव छोड़कर, सब लोगों को समान रूप से देता है। उसकी वर्षा से चारों दिशाओं में आनन्द होता है। इसकी भी शिक्षा से सर्वत्र सुख ही सुख उत्पन्न हो जाता है। अतः गुण, धर्म तथा स्वभाव के मिल जाने से, ब्रह्मचारी भी मेघ और मेघ भी ब्रह्मचारी ठहरा। दोनों में कैसी अच्छी समता दरसाई गई है।

(13)

अग्नौ सूर्ये चन्द्रमसि मातरिश्वन् ब्रह्मचार्यप्सु समिधमादधाति।
तासामर्चींषि पृथगभ्रे चरन्ति तासामाज्यं पुरुषो वर्षमापः।।

(1) ब्रह्मचारी अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, वायु और जल में समिधा डालता है। (2) उनकी किरणें अन्य

www.thearyasamaj.org

मेघों में पहुँचती हैं। और (3) उनसे घृत, पुरुष, वर्ष और जल की उत्पत्ति होती है।

(1) ब्रह्मचारी वाणी, नेत्र, मन, प्राण और वीर्य की शक्तियों को बढ़ाता है।

(2) इन शक्तियों के प्रभाव से वह दूसरे उपकारी लोगों को भी प्रभावित करता है।

(3) और उन शक्तियों के कारण बुद्धि, बल, ज्ञान, सुख और शान्ति की उत्पत्ति होती है।

ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मचर्य और विद्याभ्यास से अपनी आत्मिक और शारीरिक शक्तियों को बढ़ाता है। फिर वह अन्य सुपात्र लोगों को इन शक्तियों के बढ़ाने का उपदेश करता है। इस प्रकार उसके कारण उनमें बुद्धि बल, ज्ञान, सुख और शान्ति की वृद्धि होती है। ऊपर के मन्त्र का यही मूल तात्पर्य है।

(14)

आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम औषधयः पयः।
जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिदं स्वराभृतम्।।

आचार्य मृत्यु, वरुण, सोम, औषध और पय है। उसके सद्भाव मेघ हैं, उनसे यह तेज रक्षित होता है।

आचार्य अज्ञान–नाशक, सदाचार–शिक्षक, शान्ति–दायक, शुद्धिकारक और उत्साह–वर्द्धक होता है। उसके सात्विक गुणों से यह अधिकार प्राप्त होता है।

आचार्य अपने ब्रह्मचारी शिष्य के अज्ञान–रूपी शरीर का नाशकर, उसको सदाचार की शिक्षा देता है। उसकी शान्ति और पवित्रता के लिये यत्न करता है, और सत्कर्म करने के लिये सदा उत्साहित करता रहता है। उसके सात्विक गुणों से ही विद्यार्थी पर उत्तम प्रभाव पड़ता है। इसीलिये उसका इतना महत्व है। वास्तव में ब्रह्मचारी के लिये वह सब कुछ है।

(15)

अमा घृतंकृणुते केवलमाचार्यो भूत्वा वरुणोयद्यदैच्छत् प्रजापतौ।
तद्ब्रह्मचारी प्रायच्छत् स्वान् मित्रो अध्यात्मनः।।

(1) आचार्य शिष्य के सम्मेलन से केवल घृत निकालता है। और (2) वरुण बनकर, जो–जो प्रजापति के लिये चाहता है, सो–सो सूर्य ब्रह्मचारी अपनी आत्मिकता से प्रदान करता है।

(1) आचार्य अपने यहाँ रहने वाले ब्रह्मचारी के सहवास से परमोत्तम ज्ञान को उत्पन्न करता है।

(2) और मार्गदर्शक बनकर प्रजा के पालन के लिये, जो विचार करता है, उसे वह सूर्य सा प्रतिभावान् ब्रह्मचारी अपनी योग्यता से पूर्ण करता है।

आचार्य अपने शिष्य ब्रह्मचारी को पास रखकर, गूढ़तत्वों का उपदेश करता है। उसकी शंकाओं का समाधान करता है। वह जिन श्रेष्ठ विचारों को जनता के हित के, उस पर प्रकट करता है, वह भी योग्य होकर, अपने आचार्य की आज्ञा का पालन करता है।

www.thearyasamaj.org

(16)

आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः।
प्रजापतिर्विराजति विराडिन्द्रो भवद्वशी।।

(1) आचार्य ब्रह्मचारी है (2) प्रजापति ब्रह्मचारी है। प्रजापति विराजित होता है, (3) और संयमी विराट् इन्द्र है।

(1) आचार्य ब्रह्मचारी रहकर, ज्ञानोपदेश करता है।

(2) राज्याधीश भी ब्रह्मचर्य का पालन कर शासन करता है।

(3) और संयमी राजा भी नृपेन्द्र कहलाता है।

आचार्य शिष्य पर और राजा प्रजा पर शासन करता है। इसलिये इन दोनों को ब्रह्मचारी होना योग्य है। अर्थात् इन्हें ज्ञानी और बली होना चाहिये। क्योंकि आचार्य का अनुकरण उसके शिष्य तथा राजा के आचरण का अनुकरण उसकी प्रजा करती है। यदि ये ब्रह्मचारी न हों, कुमार्गगामी हों, तो इन दोनों शिष्य और प्रजा के ब्रह्मचर्य में बाधा पहुँचती है। ठीक है–

"यथा गुरुस्तथा शिष्यो, यथा राजा तथा प्रजा।"

(17)

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिण मिच्छते।।

(1) ब्रह्मचर्य के तप से राजा राष्ट्र की रक्षा करता है और (2) आचार्य ब्रह्मचर्य से ब्रह्मचारी को चाहता है।

(1) ब्रह्मचर्य के प्रभाव से राजा अपनी प्रजा को अधिकार में रखता है।

(2) और आचार्य ब्रह्मचर्य के ही कारण अपने विद्यार्थी का प्रिय करता है।

देश की सुख-शान्ति के दो ही स्तम्भ हैं। एक राजा और दूसरा आचार्य। इन दोनों को ब्रह्मचारी होना चाहिये। एक 'बल' से और दूसरा 'ज्ञान' से लोक-सेवा करता है। इस दृष्टि से यहाँ दोनों में समानता है, जिस राजा में विक्रम नहीं, उसकी प्रजा उच्छृंखल हो जाती है और जिस आचार्य में बोध नहीं, उसका शिष्य भी अपठ, अयोग्य तथा मूर्ख हो जाता है। विक्रम और बोध दोनों का मूल 'ब्रह्मचर्य' ही है।

(18)

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनड्वान ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीर्षति।।

(1) ब्रह्मचर्य से कन्या युवक पति वरती है और (2) वृषभ तथा अश्व भी ब्रह्मचर्य-पालन से

www.thearyasamaj.org

घास खाता है।

(2) और वीर्यवान इन्द्रिय-समूह भी ब्रह्मचर्य-बल से ही अपने विषयों का उपभोग कर सकता है।

जैसे बालक ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वैसे ही कन्यायें भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हैं। तत्पश्चात् वे अपने सदृश वर से परिणय करने योग्य होती हैं। अनड्वान का अभिप्राय 'वीर्यवान' और अश्व का 'इन्द्रिय-समूह' और घास का उसके 'विषय' से है। ब्रह्मचर्य के पालन से इन्द्रिय-समूह वीर्यवान (परिपुष्ट) हो जाता है। परिपुष्ट होने पर, ही वह अपने व्यापार को समुचित रूप में कर सकता है।

उदाहरण के लिये एक इन्द्रिय 'नेत्र' को ही लीजिये। इसका विषय अवलोकन है। यदि यह अशक्त हो जाय, तो ठीक-ठीक देखने का व्यापार नहीं हो सकता।

अनड्वान, अश्व और घास का प्रचलित अर्थ नहीं। यदि ऐसा होता, तो वेद की, इस कन्या के ब्रह्मचर्य वाली ऋचा के साथ यह असंगत बात न कही जाती।

ऊपर के मन्त्र में अलंकार-रूप से यही बात समझाई गई है। इससे पुरुष-स्त्री सब के लिये ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक प्रतीत होता है।

(19)

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।
इन्द्रोह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्॥

(1) ब्रह्मचर्य के तप से देवों ने मृत्यु को जीता। और (2) इन्द्र ब्रह्मचर्य से ही देवों में तेज भरता है।

(1) अखण्ड ब्रह्मचर्य के पालन से ही विद्वानों ने अकाल मृत्यु को वश में किया।

(2) और ब्रह्मचर्य के ही प्रताप से सर्वश्रेष्ठ विद्वान्, योग्य पुरुषों को ज्ञानोपदेश करता है।

प्राचीन समय में कई अखण्ड ब्रह्मचारी हो गये हैं, जो मृत्यु को भी कुछ नहीं समझते थे। जब उनकी इच्छा होती थी, तभी शरीर छोड़ते थे। यही मृत्यु पर विजय प्राप्त करना कहलाता है?

बिना ब्रह्मचर्य के कोई उत्तम विद्वान् नहीं हो सकता। इसीलिये जो परमोत्तम विद्वान् होना चाहे, वह ब्रह्मचर्य के प्रभाव से ही वह जनता के योग्य पुरुषों में प्रतिष्ठित हो सकता है।

(20)

ओषधयो भूतभव्य महोरात्रे वनस्पतिः।
सम्वत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः॥

ओषध, वनस्पति, भूत-भव्य, दिन-रात और ऋतुओं के साथ सम्वत्सर, सभी ब्रह्मचारी हैं।

औषधियों, वनस्पतियों, भूत-भविष्य, दिन-रात और ऋतुओं के साथ रमने वाला सम्वत्, सभी में ब्रह्मचर्य है।

यदि ये सब नियमों के अनुकूल न चलें, तो इनमें शक्ति नहीं रह जाती। संयम से ही सबकी स्थिति है। जड़-जंगममय संसार भर में ब्रह्मचर्य का महत्व है। अतः मनुष्य को ब्रह्मचंर्य में श्रद्धा रखनी चाहिये।

-(शेष अगले अंक में)

www.thearyasamaj.org

मनुष्य जीवन का साफल्य

लेखकः- श्यामसुन्दरदास

हम यहाँ किन्हीं मत मतांतरों के विचारों का आश्रय न लेकर साधारण बुद्धिग्राह्य सिद्धांतों के अनुसार अपना मत प्रकट करना उचित समझते हैं। हिन्दू मतानुसार कभी कोई आकस्मिक घटना नहीं होती है, वरन् जिन घटनाओं को संसार आकस्मिक कहता है, वे भी पूर्व जन्मों के कर्मानुसार दृढ़ सिद्धान्तों पर निर्भर हैं। अतः किसी घटना को आकस्मिक न कहना चाहिए। यह विचार मानते हुए भी हम यहाँ आकस्मिक शब्द का प्रयोग करेंगे। ऐसे स्थानों पर आकस्मिक शब्द से उन घटनाओं का बोध होना चाहिए, जिन्हें संसार ऐसी कहता है। इसी भाँति ईश्वर सम्बन्धी विचारों को मानते हुए भी हम यहाँ उनका सहारा न लेकर साधारण विचारों का आश्रय लेंगे।

कौन जीवन सफल है, इस प्रश्न का निर्णय अनकानेक गहन दार्शनिक सिद्धांतों पर निर्भर है। फिर भी दर्शनशास्त्र के निगूढ़ तत्वों पर हम यहाँ साधारण सर्वमान्य विचारों के अनुसार भी अपने भाव प्रगट करेंगे। मनुष्य जीवन में प्रकृति और सभ्यता के दो बड़े भारी मूल कारण हैं। इन्हीं के अनुसार चलने पर उसकी सफलता निर्भर है। जो मनुष्य धार्मिक सम्प्रदाय और समाज, इन दोनों को उचित प्रकार से मिलाकर कार्य करता अथवा कराता है, उसी के द्वारा कर्मों के दृढ़तानुसार मनुष्य जीवन का साफल्य न्यूनाधिक रीति से प्राप्त होता है। उसी मनुष्य का जीवन सफल कहा जा सकता है जो अपने प्राकृतिक एवं सामाजिक बल को क्षीण न करके उसे अधिकाधिक उन्नत करता हुआ उसका उचित प्रयोग करता है।

प्रत्येक मनुष्य इस जन्म में बिना कोई कर्म किए ही अपने माता के गुण-कर्मानुसार बलिष्ठ अथवा निर्बल एवं अन्य अनेकानेक गुणावगुण-सम्पन्न शरीर पाता है। फिर अपने जीवन के आरम्भ काल में बिना कुछ भी प्रयत्न किए सुसंग अथवा कुसंग पाकर वह असंख्य गुण अथवा अवगुण प्राप्त करता है। इसी भाँति अपने सम्बन्धियों की सांसारिक स्थिति के अनुसार बिना कुछ किए ही उसको भी तदनुसार भली या बुरी स्थिति प्राप्त होती है। कोई किसी बड़े राज्य का उत्तराधिकारी होकर जन्म लेता है और कोई अपने पिता की आर्थिक दरिद्रता के कारण "जानत है चारि फल चारिही चणक को।" इसी भाँति किसी के शरीर में भीम एवं राममूर्त्ति बनने की संभावना होती है और किसी को पैत्रिक दमा, क्षय रोगादि के कारण येन केन प्रकारेण शरीर को स्थिर रखना ही कठिन हो जाता है। इन बातों को पूर्वजन्म-संस्कारभव मानिए, अथवा आकस्मिक घटनाएँ, किन्तु वास्तविक जीवन साफल्य से इनसे कोई भी सरोकार नहीं है, यद्यपि संसार विचारशून्यता के कारण प्रायः इन्हीं को जीवन साफल्य की सामग्री समझता है। शुद्ध विचारों से उसी का जीवन सफल समझा जायगा, जो भाग्यदत्त एक पैसे भर गुणों की मात्रा को बढ़ाकर डेढ़ पैसे भर कर लेवे, न कि उसका जो एक लाख भाग्यदत्त मात्रा को पचास हजार भर ही रख छोड़े। हम बेकमाए हुए गुण अथवा द्रव्य-समुदाय को भाग्यदत्त मानते हैं।

प्रकृति द्वारा अनेकानेक सद्गुण अथवा दुर्गुण सम्पन्न शरीर प्रत्येक मनुष्य को मिलता है। हम इसी को भाग्यदत्त शरीर कहते हैं। मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है कि नित्यशः सद्गुणारोपण एवं दुर्गुणदमन द्वारा इस भाग्यदत्त शरीर की उन्नति करता जाय। यह प्रायः देखने में आया है, कि जिनका भाग्यदत्त शरीर प्रबल है, वे उसके प्राबल्य पर भरोसा करके उसकी उन्नति की ओर तादृश ध्यान नहीं देते, जिससे क्षीण होते-होते समय

www.thearyasamaj.org

पर शतंजीवी होने के स्थान पर वे साठ सत्तर वर्षों में घिस जाते हैं, और प्रत्येक समय में पूर्ण बल प्रयोग के कामों को करने में असमर्थ रहकर बलहीनता, रोग एवं अन्य दुर्गुणों का शिकार बने रहते हैं। ऐसी दशा में बरबस कहना पड़ेगा कि उन भाग्यवान पुरुषों ने प्रकृतिदत्त थाती का दुरुपयोग करके अपने जीवन-साफल्य का ह्रास किया। उधर भाग्यदत्त दुर्बल शरीर वाले महाशय आहार, विहारादि सम्बन्धी नियमों पर पूर्ण ध्यान देकर प्रायः प्रकृतिदत्त थाती को उन्नति प्रदान करते हुए देखे गए हैं। ऐसे लोग यद्यपि भाग्यदत्त बली शरीरवाले से निर्बल भी हों, किन्तु दार्शनिक दृष्टि से फिर भी उनका शारीरिक जीवन सफल समझा जायगा। जो लोग प्राकृतिक नियमों पर उचित प्रकार से न चलकर अपनी शारीरिक दशा का ह्रास करते हुए भाग्यदत्त गुणों की अवहेलना करते हैं, वे धीरे-धीरे आत्महत्या करने के दोषी होते हैं। बहुतों का विचार है कि हम अपने शरीर के मालिक हैं, सो उसका मनमाना उपयोग कर सकते हैं। यह विचार सब प्रकार से तिरस्करणीय है। प्रत्येक शरीरी के लिये भाग्यदत्त शरीर एक थाती है। जितना बल और जितनी कार्यदक्षता के योग्य उसे प्रकृति ने बनाया है, उसे बनाए न रखना मानों प्रकृति को धोखा देना है।

प्रति मनुष्य के कर्त्तव्य सभ्यता एवं प्रकृति सम्बन्धी नियमों के अनुसार होने चाहिएँ और इन्हीं को पालन करते हुए उसे अपने शरीर द्वारा अधिक से अधिक भलाई करनी उचित है। प्रकृति सम्बन्धी कर्त्तव्यों का वर्णन सूक्ष्म रीति से ऊपर किया जा चुका है। शरीर को स्वस्थ रखकर कार्यकुशल बनाना प्राकृतिक नियमों का मुख्य अंग है। इसके अतिरिक्त मानसिक भाव भी प्राकृतिक नियमों के समान ही हो गए हैं, यद्यपि इन दोनों का अन्तर ध्यान में रखने से मनुष्य बहुत सी बुराइयों से बच सकता है। यह अन्तर यहाँ पर हम एक उदाहरण द्वारा दिखलाते हैं। साधारण शरीर के लिये यदि समुचित वस्त्र, भोजन और व्यायाम प्राप्त हों, तो उसे आपत्योपादिनी वासनाओं की समुचित संतुष्टि के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिए। उसे इसकी कुछ परवाह नहीं है, कि रूई भरे खासे के क़पड़े से शीत निवारण होता है, अथवा मखमल या जामेवार से। इसी भाँति अच्छे से अच्छे पोलो, फुटबाल आदि से प्राप्त व्यायाम को वह निर्जन स्थान में भी दौड़ने से प्राप्त व्यायाम से श्रेष्ठतर नहीं समझता। यही दशा भोजन की है। फिर मानसिक भाव इन स्वाभाविक सुविधाओं के अतिरिक्त अनेकानेक अन्य पदार्थ मांगता है, और ज्यों-ज्यों थोड़ी वासनाएँ शांत होती जाती हैं, त्यों-त्यों अन्यान्य विस्तृत मनोभाव जागृत हो होकर शरीर को चैन नहीं लेने देते। इसी से कहा है कि "पार लोभसागर को नाहीं। भ्रमत सबै माया भ्रम माहीं।"

यह मानसिक भाव प्राकृतिक शरीर को सदैव घेरे रहता है और उसे अनेकानेक दुःख एवं सुख पहुँचाता है। इसीलिये धार्मिक पुरुषों ने मानसिक चांचल्य का हनन मनुष्य के लिये परमावश्यक बतलाया है। संसारत्यागी मनुष्यों के लिये यही उचित है भी। किन्तु संसार के लिये यह एक प्रकार से आवश्यक भी है, क्योंकि बिना इसके पूर्ण उन्नति एवं सभ्यता स्थापित नहीं हो सकती। परोपकार के लिये मनुष्य को उतना ही परिश्रम करना उचित है जितना कि अपने लिये, किन्तु मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बलहीन है कि 100 में 99 लोग परोपकार्य उतना परिश्रम कभी न करेंगे जितना कि अपने लिये। इसीलिये मानसिक चांचल्य द्वारा मनुष्य और संसार दोनों की अच्छी उन्नति होती है और यहाँ तक यह श्लाघ्य भी है। किन्तु यह मानसिक चांचल्य यहीं तक नहीं ठहरता, वरन् बहुधा मृगतृष्णा सा बनकर शरीर को भाँति-भाँति के क्लेश पहुँचाता है। इसीलिये संसार में शिक्षकों और उपदेशकों की भी आवश्यकता है, कि इसकी उचित सीमाओं को सदा सम्मुख रखकर लोगों के अनुचित क्लेश दूर करें। प्रत्येक मनुष्य को पूर्णोन्नति के लिये सदैव यत्नवान रहना चाहिए तथापि यह भी

www.thearyasamaj.org

स्मरण रहे कि पूर्णोन्नति एक लक्ष्य मात्र है, वह उपलब्ध कभी नहीं हो सकती। जब तक मनुष्य को उचित व्यायाम का समय मिलता है, जब तक वह वस्त्राभाव से शीत नहीं खाता और अन्नाभाव से भूखा नहीं रह जाता है, तब तक अधिकाधिक उन्नति के लिये वह यत्नशील भले ही रहे किन्तु विफल-मनोरथ होने तथा हानि उठाने में उसे दुःखित कभी न होना चाहिए। जब तक उसके पास प्राकृतिक अभाव नहीं है, तब तक मानसिक अभाव से उसे इतना ही समझना चाहिए कि मुझे मन बालक के खिलाने के लिये अमुक खिलौना अप्राप्य है। जैसे बालक जब चाँद के लिये रोने लगता है तब उसे दूसरे पदार्थों में भटकाते हैं, इसी भाँति इस हठी बालक, मन, को भी अन्य बातों से सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए। देह में मन, बालक और बुद्धि युवा के समान है। यह बालक सहस्रों प्राप्य एवं अप्राप्य पदार्थों के लिये हठ किया करता है। युवा बुद्धि का कर्त्तव्य है कि प्राप्य पदार्थों से इसका तोष करे और जब यह अप्राप्य वस्तुओं की ओर दौड़े, तब युक्ति से इसे क्लेश दिए बिना ही प्राप्य पदार्थों की ओर ले जावे। जिसके मन बालक ने युवा बुद्धि को जीत लिया है, वह चाहे बड़ा भारी महात्मा, राजा आदि कोई भी हो, तथापि उसका मनुष्य जीवन सफल नहीं है। कहा जा सकता है कि 100 में 99 लोगों के लिये ये विचार अप्राप्य लक्ष्य मात्र हो सकते हैं, तथापि उपदेशकों से यदि अप्राप्य लक्ष्य छीन लिए जायँ तो उनका सब काम चौपट हो जाय। इस संसार ने अद्यावधि लक्ष्यों ही के सहारे उन्नति की है और भविष्य में भी करेगा।

मन बालक के सबसे बड़े हठ स्वार्थ सम्बन्धी होते हैं। इनमें भी सन्तान, कलत्र, पति, अन्य कुटुम्बी, मित्रादि के भाव स्वार्थ से बढ़कर समय पर ऐसे प्रबल हो जाते हैं कि इनके अकाल वियोग से कभी-कभी शरीर तक नष्ट हो जाता है। अतः यह स्वार्थ आदि में स्वार्थ होने पर भी समय पर उससे कुछ पृथक् हो जाता है। अपने प्रीति-भाजन लोगों को अपने से भी अधिक मानना सभ्यता की बहुत बड़ी सामग्री है और उनके बचाने के लिये उचित प्रकार से शरीर का न्योछावर तक कर देना सब प्रकार से प्रशंसनीय है। फिर भी अनावश्यक प्रकार से थोड़ा भी क्लेश मन में लाना सदैव मानसिक दुर्बलता के नाम से पुकारा जायगा। अपने प्रिय मनुष्य की सहायता, चिकित्सादि करने में चाहे जितना कष्ट अथवा धन-व्यय सहन किया जाय, किन्तु उनके मरणांतर थोड़ा भी दुःख करने से मन-बालकवाली उपरोक्त कहावत चरितार्थ हो जाती है। जब तक शरीर प्राकृतिक रीतियों से सबल है, तब तक मनश्चांचल्य के हठ से उसे दुर्बल बनाना भाग्यदत्त शरीर की कर्मों द्वारा अवहेलना करना है। भारी से भारी विपत्ति पड़ने पर भी युवा बुद्धि का शिथिलीकरण घोर अन्याय एवं पातक है। हमारे विचार में अपने शरीर की अनुचित हानि वैसी ही गर्हित एवं पापपूर्ण है, जैसा कि किसी अनय शरीर को हानि पहुँचाना, क्योंकि उस शरीरी द्वारा एक शरीर को हानि पहुँची। कर्ण पर्व में भगवान् श्रीकृष्णचंद्र ने अर्जुन से कहा भी है-"पार्थ आत्मबधं भ्रातृवधं तुल्य पाप को भौन।" अपने अदृढ़ चित्त से अपने ही शरीर को हानि पहुँचाने अथवा मरने देने से उतना ही पातक होता है, जितना कि छुरा लेकर उसे काटने से, क्योंकि इन दोनों दशाओं में शरीरी पर नरवध का पातक लगता है।

यहाँ तक भाग्यदत्त शरीर एवं प्राकृतिक शरीर का वर्णन मुख्यता से रहा, और तत्सम्बन्धी नियमों पर विचार हुआ। अब हम सभ्यता सम्बन्धी नियमों की ओर अपने प्रिय पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। प्रकृति अपने ही शरीर को पाल्य मानती है, किन्तु सभ्यता अन्य शरीरों की ओर भी वैसा ही विचार श्रेयस्कर समझती है, यहाँ तक कि अत्युच्च सभ्यता अन्य शरीरों को अपने शरीर से श्रेष्ठतर मानती है। जिस मनुष्य द्वारा सभ्यता विषयक जितने नियमों का परिपोषण होता है, वह उतना ही परोपकारी एवं सुकर्मी समझा जायगा। संसार में

www.thearyasamaj.org

परोपकार सम्बन्धी इतने कार्य हैं कि बिना नियम स्थिर किए एक मनुष्य की शक्ति अनेकानेक कर्त्तव्यों में फैलकर उनमें से प्रत्येक के लिये इतनी लघु हो जायगी, कि उसका होना न होना बराबर हो जायगा। इसीलिये प्रवीण पुरुषों ने आज्ञा दी है कि प्रत्येक मनुष्य को एक-एक जीवनोद्देश्य स्थिर कर लेना चाहिए। यह लक्ष्य अपने सामर्थ्य एवं परोपकारिणी वाणि के दृढ़तानुसार होगा, किन्तु प्रत्येक विचारवान व्यक्ति को कोई कोई लक्ष्य रखना अवश्य चाहिए।

संसार में मनुष्य को धनप्राप्ति, श्रम, प्रतिग्रह और चोरी से होती है। इन शब्दों के परम विस्तृत अर्थ लेने से यह कथन यथार्थ समझ पड़ेगा अन्यथा नहीं। दाय में धन प्राप्ति भी एक प्रकार का दान लेना कहा जा सकता है। इसी भाँति स्वामी जी की इच्छा के प्रतिकूल उचित श्रम छोड़ अन्य किसी भी रीति से धनाहरण चौर कर्म है, यह सभी धर्मोपदेशकों ने कहा है। महात्मा मनु और हजरत मूसा इन दोनों ने अपने-अपने अनुयायियों के लिये दस-दस आज्ञाएँ छोड़ी हैं। इन दोनों महात्माओं ने चोरी को उचित ही बुरा बतलाया है। यथा-

"धृतिक्षमादमोऽस्तेयं शौचमिद्रिंयनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।" -मनु0
"तू चोरी मत कर" -मूसा।

चौर कर्म अनेक प्रकार से जानते और न जानते हुए भी हो सकता है। दर्शनशास्त्रों ने सभ्य संसार के शिक्षणार्थ उचित कर्मसमुदाय का निचोड़ स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्व नामक तीन शब्दों में कहा है। इन्हीं पर पूर्ण रूप से विचार करने से मनुष्य चौरकर्म से बच सकता है। संसार में स्वतंत्रता के लिये सब का स्वभाविक अधिकार है, किन्तु केवल स्वतंत्रता का अनुयायी होने से मनुष्य क्रूर एवं अन्यायी हो सकता है। इसीलिये दार्शनिकों ने समता सिद्धान्त का वर्णन किया है। अतः यदि तुम्हारी स्वतंत्रता ऐसी है जिससे किसी दूसरे की स्वतंत्रता में बाधा पड़ती है, तो वह चौरकर्म से खाली नहीं है, क्योंकि अपनी स्वतंत्रता रक्षित रखने को तुम उसकी स्वतंत्रता चुरा रहे हो। समता सिद्धान्त से इस चोरी का बहिष्कार हो जाता है। इस पर भी स्वतंत्रता और समता रखनेवाला मनुष्य स्वत्वरक्षण में क्रूर हो सकता है। इसीलिये सुधी पुरुषों ने इनमें भ्रातृत्व भाव जोड़ा है। अतः सभ्यता के नियमों का वह अनुयायी श्लाघ्य कहा जायगा जो चोरी से बचता हुआ उपरोक्त तीनों सिद्धान्तों पर अनुगमन करे।

प्रतिग्रह से प्राप्त धन संसार के देखते हुए निंद्य नहीं कहा जा सकता है, किन्तु उत्तम श्रेणी का भी वह नहीं है। इस अन्तिम श्रेणी में परिश्रम द्वारा प्राप्त धन की ही गणना हो सकती है। आचरणोन्नति के लिये भी ऐसा ही धन विशेषतया सहायक है। बहुधा देखा गया है कि परिश्रम बिना प्राप्त धन से धनी मनुष्य आचरण में परिश्रमी पुरुष के बराबर नहीं होते। इसलिये ऐसे धनिकों को सदैव ध्यान रखना चाहिए कि स्वभावशः उनका धन उनके जीवन साफल्य का बाधक है, और इसलिये उन्हें इस साफल्य की प्राप्ति के हेतु विशेषतया श्रमशील रहना चाहिए।

संसार में प्रायः देखा गया है कि आकस्मिक घटनाएँ सर्व साधारण की दृष्टि में एक मनुष्य के श्रम अथवा कभी-कभी श्रमहीनता को भी साफल्य के परमोच्च शिखर पर चढ़ा देती हैं। इन बातों से देखने को तो सफलता प्राप्त होती है, किन्तु वास्तव में नहीं। वास्तव में उसी का जीवन सफल एवं धन्य है जो अपने भाग्यदत्त शरीर की उचित प्रकार से उन्नति करता हुआ अपने कर्मों से दूसरे सत्पुरुषों को अधिक से अधिक वास्तविक आदान प्रदान करे। ❁❁❁

www.thearyasamaj.org

उन्नत जीवन का उपदेश

रचयिताः कविवर रामनरेश त्रिपाठी

(1)

विद्या पढ़ सर्वत्र सहायक सीख कला-कौशल विद्वान्।
शुद्ध सदाचारी उदार हो प्रतिभा के प्रेमी विद्वान्॥
दृढ़प्रतिज्ञ निर्भय तेजस्वी बनो शान्तिप्रिय संशयहीन।
कभी न होने दो अपने को कायर दुर्बल विवश मीन॥
वीरों को आदर्श बनाकर सुधरो और सुधार करो।
बनो स्वदेश जाति के नेता नवजीवन से प्यार करो॥

(2)

सुखद सदुपदेशों के द्वारा कुल कुरीतियाँ कर दो बन्द।
मिलने दो सबको समाज में उन्नत जीवन का आनन्द॥
आपस का मतभेद मिटाओ तजोव्यर्थ बकवाद विवाद।
धर्म नियम पालन करने में करो नहीं आलस्य प्रमाद॥
सबके साथ सप्रेम सभ्यता सहित सत्य व्यवहार करो।
बनो स्वदेश जाति के नेता नवजीवन से प्यार करो॥

(3)

संकट में भाई यदि कोई फंसे वहाँ पहुँचो तत्काल।
यथाशक्ति करके सहायता सब विधि से लो उसे सँभाल॥
सब स्वदेशवासी मनुजों को समझो प्यारे बन्धु समान।
शुद्ध हृदय मानो उनकी सेवा में अपना सम्मान॥
दीन अनाथ दरिद्र भिखारी दुखियों का उपकार करो।
बनो स्वदेश जाति के नेता नवजीवन से प्यार करो॥

(4)

देशकाल अनुसार जगत में बिना रोक खुल खेलो खेल।
होने दो सम्पत्ति सुमति में न्याय और प्रभुता में मेल॥
लोकमान्य हो मरना सीखो यशस्वियों की पकड़ो राह।
बहने दो सबके हृदयों में देशभक्ति का प्रबल प्रवाह॥
'रामनरेश' मेल के मद में अपना उच्च विचार करो।
बनो स्वदेश जाति के नेता नवजीवन से प्यार करो॥

www.thearyasamaj.org

देव दयानन्द

रचयिताः ओंकारसिंह विभाकर, उमरा, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

(1)

"भारत है भारतीयों के लिये" बताया कौन?
जब यहाँ गोरों का साम्राज्य ही प्रचण्ड था।
उत्कृष्ट होता है स्वदेशी राज्य औ सुराज्य,
विधवा उबारने में कौन मेरूदण्ड था।
नारियों को मान दिया दलितों को प्राण दिया,
वैदिक प्रकाश पुंज कौन पूर्णचन्द था।
देश की दशा निहारि, फूट-फूट रोया कौन,
भारत सपूत वही देव दयानन्द था॥

(2)

धर्म के ही नाम पर अगणित पन्थ बने,
ज्ञान के प्रकाश का कपाट ही तो बन्द था।
काली झूला काशी करवट मोक्ष धाम बना,
पाखण्डवाद का सितारा ही बुलन्द था।
नारियों-दलित-दीन दुखिया जनों के लिये,
मन्दिर-विद्यालयों का दरवाजा बन्द था।
किसने मिटाया इन अमिट कुरीतियों को,
भारत सपूत वही देव दयानन्द था॥

❁❁❁

मधुर व्यवहार

जीभ में अमृत भी रहता है और जहर भी। कडुए असम्मान सूचक वचन बोलकर किसी को भी शत्रु बनाया जा सकता है, किन्तु यदि मिठास को स्वभाव का अंग बना लिया गया हो, तो इस मधुर व्यवहार से प्रभावित करके पराये को भी अपना बनाया जा सकता है। मधुर व्यवहार का वशीकरण मंत्र जिसे आता है, वह दूसरों का हृदय जीत लेता है और हर किसी के मन में अपने लिए जगह बना लेता है।

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥

www.thearyasamaj.org

"गोवर्धन-परिक्रमा"

(वेद प्रदर्शित पराक्रम-प्रदक्षिणा)

लेखकः- देवनारायण भारद्वाज, रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ० प्र०)

पौराणिक धारणाओं से हटकर तथ्यान्वेषी विचारकों के अनुसार व्रज-क्षेत्र में राजस्थान की ओर से भीषण बाढ़ का पानी आकर भयंकर ध्वंस करता था। इससे सुरक्षा के लिये व्रज-नायक श्रीकृष्ण ने व्रजवासियों को किसी तेज तर्जनी से नहीं, प्रत्युत अपनी सर्वप्रियता के आकर्षण से कृश कनिष्ठा के संकेत मात्र से एकत्र करके, वहाँ पर जो बांध बनवाया था, उसी के अनुरक्षण-निरीक्षण के लिए परिभ्रमण हेतु प्रेरित किया था। अब उसी को गोवर्धन पर्वत मानकर अनेक मठ-मन्दिर-आश्रम तथा गोमुख कन्दरा बनाकर पंचकोसी से चौरासी कोस परिक्रमायें की जाती हैं। अब तो रात्रि-दिन भजन-कथा मण्डली बारहों महीने चलती रहती हैं। अपने राजकीय सेवा काल में वहाँ स्थित खण्डस्तरीय कार्यालयों के निरीक्षण हेतु जाता रहा हूँ, किन्तु परिक्रमा पथ पर कभी अग्रसर नहीं हुआ। अब तो वहाँ के एक महन्त स्वामी गणेशपुरी जी महाराज अलीगढ़ परिभ्रमण पर आते हैं तो वरेण्यम-कुटी पर पधार कर पेयजल प्रबन्ध के लिए सहयोग राशि लेकर परिवार को पुण्य प्रसाद दे जाते हैं।

आइए गोवर्धन से परिचय करलें। विनाशक बाढ़ को रोकने से गोवर्धन अर्थात् भूमि की वृद्धि संवृद्धि होती है। भूमि के रक्षण से गो अर्थात् गायों का पालन होता है। खेती-वाड़ी एवं गोपालन से, मानव गोस्वामी-अपनी इन्द्रियों व वाणी का अधिकारी बनता है, और रवि व ज्ञान की किरणों को ग्रहण कर सन्मार्ग द्वारा मोक्षगामी बनता है। पता चला कि अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय कोष को सचेष्ट बनाकर वह आनन्दमय कोष का अधिकारी बनता है। सारांश यह है कि इन सब गो-सम्प्रदाओं को समेटने वाली मानव योनि ही गोवर्धन के स्वरूप को सम्मानित करती है, और इसके समुत्कर्ष के लिये जो मानसी गंगा में गोते लगाकर प्रदक्षिणा की जाती है, वही वास्तविक गोवर्धन परिक्रमा है। भौतिक रूप में भी वहाँ यह प्रतीक गंगा उपस्थित है, जिसे हम मानस में उतारकर आगे गोवर्धन परिक्रमा पर बढ़ते हैं।

अथवर्वेद के 19वें काण्ड सूक्त 18 में 10 मन्त्र हैं। वे सभी दसों दिशाओं में इस गोवर्धन-परिक्रमा हेतु पथ-प्रदर्शन करते हैं। सुविधा यह है कि तीन शब्दों को छोड़कर सभी मन्त्रों की शब्दावली समान है। अस्तु प्रथम मन्त्र को आधार बनाकर दशों मन्त्रों की मनसा-वीथिका बनाई जा सकती है। देखिये-

"अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु। ये माघायवः प्राच्यां दिशोऽभिदासात्॥" अर्थात् वसुपति अग्रणी प्रभु की ओर हम पहुँचने की इच्छा से आगे बढ़ते हैं, तो पूर्व दिशा में हमारा अशुभ चीतने वाले हमको सताकर क्षीण करने को उद्यत होते हैं, तो अग्नि प्रभु हमको आगे बढ़ाने की शक्ति देते हैं। इसी प्रकार सभी दिशाओं की बाधाओं को पार कर साधनाओं को सफल बनाने का सन्देश इस सूक्त से प्राप्त होता है, जिसे निम्न सारणी में सूचीबद्ध कर सारणी-पथ संदर्शित किया जाता है।

www.thearyasamaj.org

गोवर्धन–प्रदक्षिणा–पथ

मन्त्र क्रम	प्रदक्षिणा पथ	लक्ष्य	पथ रोधक असुर वृत्तियाँ	पथ शोधक सुर शक्तियाँ	संरक्षक देव	देव का आदर्श	प्रत्यक्ष निदर्शन
1	पूर्व सामने की दिशा	वसुवन्तम् संसार में अपना स्थान बने	अज्ञान की अधीरता	ज्ञान की धृति	अग्नि	प्रमाद त्याग कर उठना	माता–पिता–गुरु–ईश्वर के संरक्षण में सजग होकर प्रगति करना
2	आग्नेयी पूर्व–दक्षिण मध्य दिशा	अन्तरिक्ष वन्तम हृदय की भावना	असहिष्णुता	क्षमा सहनशीलता	वायु	प्रवाह में स्थिर होना	संकल्पवान होकर वायु के प्रवाह में अग्नि रखकर लक्ष्य की ओर चलना
3	दक्षिण दक्षता की दिशा	रुद्रवन्तम् पीड़ा सहकर भी मस्तिष्क की दृढ़ता रखना	शिथिलता व अन्यमनस्कता	दम मन को दुराचरण से रोकना	सोम	ब्रह्मचर्य से सोम का रक्षण करना	संकल्पदृढ़ी होकर सदाचरण का पालन करना
4	नैऋत्य दक्षिण–पश्चिम की मध्य दिशा	सूर्य समान समय बद्धता एवं उजागर रखना	विश्वासघातक अन्धकार में छुपाकर स्वार्थ साधना करना	अस्तेय छल–कपट चोरी से बचना	वरुण	सबको आवृत करने वाला सर्वोत्तम सर्वद्रष्टा प्रभु या प्रशासक	दुर्गुण त्याग श्रेष्ठ गुण धारक सर्वप्रिय बनना
5	पश्चिम पीछे की दिशा	द्यावापृथिवीवन्तम् मस्तिष्क से लेकर शरीर के सर्व अवयवों की स्वस्थता	अशौचम मलीनता की घृणा	शौच रागद्वेष, पक्षपात त्यागना भीतर–बाहर की शुद्धि	सूर्य	अपनी प्रखर किरणों से बाहर–भीतर सृजन करता वेदोपदेशक भी प्रोत्साहन करता	जगत में गुण सृजन व धनोपार्जन करते रहना
6	वायव्य पश्चिम–उत्तर के मध्य	औषधीमती पोषक व सुधारक शक्ति संग्रहण	इन्द्रिय विग्रह वासनाओं की ओर भटकना	इन्द्रिय निग्रह दुराचरण से रोकना	आपः	सुकर्म निष्ठा सरलता प्रदान करता है	सुकर्मों में संलग्न रहने से इन्द्रियाँ वश में रहती
7	उत्तर उन्नति की दिशा	सप्तऋषीवन्तम् जिह्वा, नाक, नेत्र, कान, त्वचा, मन, बुद्धि, ज्ञान स्रोत सम्पन्नता	मति मन्दता इन्द्रियों का दुरुपयोग करना	धी: मादक द्रव्य त्याग योग से सुबुद्धि की वृद्धि	विश्वकर्मा	रचनात्मक क्रियाशीलता में मस्त रहना	सुरस, सुगन्ध, सुदृष्टि, सुशब्द, सुस्पर्श, मनन व अवधारणा से शुभ कर्म करना
8	ईशान उत्तर पूर्व के मध्य की दिशा	सहस्तवन्तम् प्राणवायु की भाँति सान्त्वना	अविद्या अन्धकार में दम घुटना	विद्या सा विद्यया मुक्तम बन्धन वेदना से छुड़ाना	इन्द्रम्	ऐश्वर्य एवं शक्तिमत्तावान होकर (मा+लत) निर्बल को रोने से बचाना	दमघोट स्थान पर जैसे मरुत वायु प्राण बचाता है, वैसे ही शक्तिशाली इन्द्र राजा निर्बल, निर्धन की रक्षा करता है।
9	ध्रुवा नीचे भूमि की ओर की दिशा	प्रजननवन्तम् सुप्रजा एवं सन्ततिवान होना	असत्य भ्रम से बाधा करना	सत्य जैसा जो हो उसको वैसा समझना बोलना और करना	प्रजापति	परमेश्वर, राजा एवं पिता की भाँति प्रजा व सन्तान का पालन करना	घर, समाज एवं राष्ट्र में मात्र जन्म या जनन करने वाली जनता नहीं अपितु प्रकृष्टरूप से प्रजा का निर्माण हो।
10	ऊर्ध्वा ऊपर आकाश की ओर की दिशा	विश्वदेव वन्तम् घर–समाज–राष्ट्र ही नहीं विश्व के लिए दैवीय उपकारी देन प्रदाता होना	क्रोधी व्यक्ति अपनी देन देकर भी देव नहीं दानव बनता है	अक्रोध फलों से लदा वृक्ष झुककर पूज्य बन जाता है।	बृहस्पति	आकार–प्रकार से बड़े होने की अपेक्षा बड़प्पन का अधिक महत्व है।	बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पन्थी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

सारणी–संचरण

(1) संरक्षक से धैर्य, धैर्य से संसार में सम्यक स्थान बनता– धरती पर खूब स्थान घेर लेना समुचित नहीं, जितना स्थान पास है उसको सुविधा–सम्मान पूर्ण बनाना ही वसना है। भारत के प्रमुख धनी के घर पुत्र जन्म हुआ। बड़ा समारोह एवं प्रह्लाद का आयोजन हुआ। बढ़ते–बढ़ते किशोरवय तक पहुँचते–पहुँचते उसका आकार विशाल और भार कुन्टल से अधिक हो गया। वह वैक्तिय का स्रोत तो बना, किन्तु सन्तान सुलभ दुलार के द्वार उसके लिए बन्द हो गये। प्रभूत धन व्यय करके एक आहार विशेषज्ञ महिला (डायरीशियन)

के अनुरक्षण में रक्खा गया। बालक व परिवार ने धैर्य बनाये रक्खा। वर्षों के उपचार के बाद अपने सामान्य स्वरूप में आया, और प्या-दुलार ही नहीं धन-अम्बार का उत्तराधिकार प्राप्त कर वह अब 'वसुवन्तम्' का अलंकार प्राप्त कर चुका है।

(2) **घृणा के ऊपर मनोबल की प्रेरणा बालक को अडिग बनाती–** नगर में एक आधुनिक प्रतिष्ठित विजडम पब्लिक स्कूल है, जिसमें प्रवेश के लिए अभिभावक लालायित होकर पंक्तिबद्ध रहते हैं। इसके विपरीत समृद्ध शिक्षा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री पी0 के0 गुप्ता ने दो बालक स्वयं गोद लेकर उनका शिक्षण-पालन सुनिश्चित कर दिया है। दोनों के माता-पिता अभावग्रस्त हैं। उनमें से बालक का नाम देव वार्ष्णेय है जो भयंकर रूप से पोलियोग्रस्त व दिव्यांग हैं, बालिका का नाम 'शायना' है जिसकी मां गृह सेविका है। बालक अपने शारीरिक कला-प्रदर्शन व बालिका अपनी भाषण शैली से सभा का मन मोह लेते हैं। अभी से उन्हें प्रदर्शन हेतु दूर-दूर आमंत्रण मिलते हैं। वे संकल्पवान होकर प्रेम प्रतिष्ठा हेतु अग्रसर हैं।

(3) **संयम-सोम रक्षण की दृढ़ता से मस्तिष्क प्रकाशित होता–** बालक सो न जायें, तो उनकी चोटी ऊपर बाँध दी जाती थी, वे अपना पाठ कण्ठस्थ करते, निद्रा का झोंका, उनकी चोटी के झटके से थमता और पाठ-स्मरण की प्रक्रिया चल पड़ती। यही रूद्ररूप की कठोरता उन्हें महान बना देती। भगवत्गीता को कण्ठस्थ करने की प्रतियोगिता में किशोरवय बाला मरियम सिद्दकी ने न केवल प्रथम स्थान पाया, प्रत्युत सम्पूर्ण देश में प्रीति-कीर्ति की स्वामिनी बनकर प्रधान मंत्री व अन्यान्य उच्च स्थानों में लाड़-दुलार प्राप्त कर जीवन सार्थक कर लिया। जिसका मस्तिष्क जाग्रत हो जाता है, वह मनुष्य जगत में प्रकाशित हो उठता है।

(4) **समय बद्धता व अवसर की सजगता श्रेष्ठ गुण वरीयता दिलाती–** लेखक को वेद प्रचार की धुन थी। आकाशवाणी से कृषि वैज्ञानिक विषय वार्ता हेतु बुलाया जाता। दस मिनट निर्धारित होते। विषय सूचक वेद मन्त्र से वार्ता प्रारम्भ करता। निश्चित समय निर्धारित अवधि का ध्यान रखना होता। एक प्रसारण अधिकारी बदल कर नये आ गये। उन्होंने कहा कि वेद मन्त्र किसान क्या जाने? इसे छोड़कर विषय पर वार्ता करें। लेखक ने प्रारम्भ में मन्त्र न पढ़कर अन्त में उसे जोड़कर वार्ता को पूरा कर दिया। बाद में प्रसारण अधिकारी मित्र गये। रंग लगा न फिटकरी रंग चोखा आ गया। अवसर यह था कि लेखक पद की गरिमा के कारण बुलाया जाता था, और समय बद्धता यह थी कि निर्धारित अवधि में विषय व मन्त्र कृषक उपयोगी बना रहे।

(5) **गुण सृजन से धनोपार्जन एवं कुल रक्षा–** लोक प्रसिद्ध महागायक ने अपनी एक मात्र सन्तान बेटी को भजन गायिका बना दिया। वृद्ध गायक गीत गाते-गाते घोर खाँसी के कारण मौन हो गया। बेटी ने बाहर किरण करों से सृजन करता है, वैसे ही बेटी ने अपने पिता के सृजन को अपना कर, निज वंश व पिता के अंश दोनों को अमर बनाकर शरीर व मेधा दोनों को प्रतिष्ठित बना दिया। जीवन को सुयश सफलता से भर दिया।

(6) **सुकर्मों में संलग्नता से शोधन-पोषण होता–** ब्राजील के प्रमुख नगर रियोडीजीनियरों में विश्व प्रसिद्ध ओलम्पिक का आयोजन हुआ जो अगस्त 2016 में पूर्ण हो गया। इसमें 5000 मीटर दौड़ के क्वालीफाइंग चक्र में न्यूजीलैंड की निकी हैंबलिन एवं अमेरिकी धाविका एवेडागोस्टिनो दोनों को चोट

www.thearyasamaj.org

आई है। हैंवलिन को गोस्टिनो ने उठाया। सहारा दिया। दौड़ने हेतु प्रोत्साहित किया। वे दौड़ जीत नहीं पार्यी, किन्तु दोनों को खेल भावना के प्रदर्शन हेतु विशिष्ट पदक से सम्मानित किया गया। इससे पहले ओलम्पिक के 120 वर्ष के इतिहास में केवल 17 व्यक्तियों को ये पदक मिले हैं। इसीलिए कहा है कि सद्गुण सुकर्म सदैव जीवन सुधार एवं शक्ति संग्रहण करते रहते हैं।

(7) **सद्बुद्धि एवं सौहार्द सदा सम्मान प्रदायक होते:–** जीत एवं हार के मध्य जो सह सम्बन्धक तत्व हैं वह है शोषित को स्वेद बिन्दुओं में बदलने की तरलता। अन्तिम स्पर्धा में स्पेन की मरीन को स्वर्ण एवं भारत की पी बी सिन्धु को रजत मिलता है किन्तु इन दोनों से हटकर वहाँ जो दृश्य उपस्थित होता है वह सद्बुद्धि एवं सौहार्द का शाश्वत स्वरूप है। मरीन जीत के बाद भी जमीन पर लेट जाती है और भावुकता के इस क्षण में अश्रु तरल हो जाती है और सिन्धु असीम स्नेह से उसे उठाती एवं सहारा देती है। सौहार्द से बड़ा स्वर्ण कौन हो सकता है।

(8) **ऐश्वर्य एवं शक्तिवान वही जो निर्बल को सान्त्वना देता–** अनेक पुत्र–बहू वाली विधवा वृद्धा को एक पुत्रवधू ने उसके फटे पुराने कपड़ों सहित कूड़े के ढेर पर पटक दिया। कोई कबाड़ी तरुण अपने साथ ले गया। वृद्धा के गुदड़ों व कपड़ों में अनेक स्वर्ण मुद्रायें अशर्फियाँ निकल आयीं। उसका जीवन धन्य हो गया। उसने वृद्धा को स्वच्छ–स्वस्थ कर सुखी बना दिया, स्वयं ससम्मान रहकर दान–पुण्य करके प्रतिष्ठित हो गया। सार्वजनिक सम्मान में वृद्धा को उच्चासन पर विराजमान देखकर अब उसके सगे पुत्र भी इस दत्तक पुत्र के भाग्य को सराह रहे थे और अपने दुर्भाग्य पर पश्चाताप कर रहे थे।

(9) **सत्य व्यवहार से आधार दृढ़ होता–** राजा के सत्य–सदाचरण का अनुकरण कर प्रजा भी परस्पर उपकारी बनती है। यह पंक्तियाँ कृष्ण जन्माष्टमी पर अंकित की जा रही है। निरंकुश राजा कंस ने अपने बहन–बहनोई देवकी–वसुदेव को जेल में बन्द कर दिया। फलस्वरूप प्रहरी सेवकगण उसके अतिशय–अत्याचारों के मन ही मन विरोधी हो गये और रातों–रात जेल के फाटक खोलकर बाल कृष्ण को गोकुल पहुँचाने में सफल हुए जिसने अपने ही मामा कंस का नाश कर दिया। इसी सत्य साधना से वसुदेव–देवकी ही नहीं यशोदा–नन्द भी अमर हो गये। भारत योगेश्वर कृष्ण को पाकर विश्व पूज्य बन गया। आप्त पुरुष कृष्ण का यही आदर्श वन्दनीय है।

(10) **बड़े की अपेक्षा बड़प्पन से संवर्द्धन होता है–** जिस आदमी का भरोसा स्वयं पर नहीं है, उसकी अच्छाई भी स्थिर अच्छाई नहीं होती। चुटकी भर से उसकी अच्छाई बुराई में बदल सकती है। सड़क हादसे में स्मृति खो चुके सैनिक को मृतमान कर उसकी पत्नी को पेंशन बाँध दी गयी। दूसरे सड़क हादसे में सात साल बाद उसकी स्मृति लौट आई और वह अपने परिवार से आ मिला। मानव शरीर में सबसे बड़ा बृहस्पति स्वरूप उसका मस्तिष्क ही है जो उसे हीन या महान बनाता है। लौटते हैं रियो ओलम्पिक की ओर, स्त्री–पुरुषों से भर पूरे दल की भारत–ध्वज वाहिका का सम्मान विश्व स्तर पर किसे मिला?, अल्पआयु सुकुमारी कन्या साक्षी मलिक को, क्योंकि उसने कांस्य सही–प्रथम पदक जीता। उसके पिता व माता रोजी रोटी कमाने को बाहर रहते थे। साक्षी अपने दादाजी के साथ पली व बड़ी हुई। पहलवान दादा की मान प्रतिष्ठा से प्रभावित साक्षी ने पहलवान बनने का प्रण ले लिया। पहलवानी की शक्ति से अधिक

www.thearyasamaj.org

क्षेत्रीय भक्ति प्रतिष्ठा एवं दादाजी की लोकप्रियता के बड़प्पन ने उसे पहलवान बना दिया। अब वह हरियाणा के बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, बेटी खिलाओ' की ब्राण्ड एम्बेडकर है। ब्राण्ड अम्बेसडर अर्थात् बृहत्तर सन्देश वाहक के रूप में भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, दुष्कर्म, अनाचार, अत्याचार के विरुद्ध कठोर निषेधात्मक वातावरण बनाना।

'मे दुहिता विराट' (ऋ0 10.159.3) वेदादेश को चरितार्थ करने वाली बेटी पी.बी.सिन्धु, साक्षी मलिक के अतिनिक दीपा करमाकर और जीतू राय को भारत का सर्वोच्च सम्मान राजीव गांधी, खेल रत्न पारितोषिक प्रदान किया गया है, जो उनके वेदोक्त विराटत्व का अभिनन्दन है। अब लौटिये गोवर्धन पर्वत की ओर। इसे 'गिरिराज' भी कहा जाता है। (यजुर्वेद 26.21) के अनुसार उपह्वरे गिरीणा ᳪसंगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत्॥'' अर्थात् गिरि व नदियों के समीप ईश्वर उपासना व विद्या वृद्धि से मनुष्य उत्तम बुद्धि व कर्मयुक्त होकर सुखी होता है। पर्वत-सरिता तो हो उसकी परिक्रमा भी होती रहे, किन्तु उपासना-साधना न हो, तो सभी कुछ व्यर्थ हो जाता है। ऐसा ही एक भयंकर दृश्य गोवर्धन क्षेत्र में देखने को मिलता है। संसार के लोग तो गोवर्धन की ओर रात-दिन दौड़ लगाते हैं; किन्तु इसी के निकटवर्ती ग्राम देवसेरस में हत्याओं का सिलसिला बढ़ते देखकर सैकड़ों परिवार वहाँ से पलायन करने को बाध्य हुए हैं। (दै0 हिन्दुस्तान 22.8.2016) निष्कर्ष यह है कि मनुष्य अपनी मानसी परिक्रमा करते हुए अपने गोलोक इन्द्रियों वाले देवस्थान (शरीर) को पराक्रमी बना लेता है तो मानो गोवर्धनधारी गोपाल का ग्वाल-बाल पुरुषार्थी बनकर अपनी जीवन यात्रा को सफल बना लेता है। ❁❁❁

तपोभूमि मासिक के पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका प्रतिमाह आप तक पहुँच रही है। हमारा हर सम्भव प्रयास यही रहता है कि पत्रिका में उच्चकोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित करके आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये यह पत्रिका जन-जन तक पहुँचे। ताकि वे इसका पूर्णतया लाभ प्राप्त कर सकें। लेकिन यह तभी सम्भव है जब आप सबका सहयोग हमें मिले।

'तपोभूमि' मासिक के पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अपना वार्षिक शुल्क चालू वर्ष या पिछले वर्ष का शुल्क अभी तक नहीं भेजा है। वे शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भिजवाने की व्यवस्था करें। वार्षिक शुल्क 150/- एक सौ पचास रूपये तथा पन्द्रह वर्ष हेतु 1500/- एक हजार पाँच सौ रूपये भेजकर पत्रिका का लाभ उठायें।

हम आपको वार्षिक विशेषांक सहित पत्रिका पहुँचाते रहेंगे। आपके सहयोग व हमारे परिश्रम से निरन्तरता बनी रहेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार भी होता रहेगा।

हमें अपने ग्राहक महानुभावों से यही अपेक्षा है कि बिना विघ्न कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। साथ ही यह भी प्रार्थना है कि आप अपने परिश्रम से नवीन ग्राहक बनवाने का सौभाग्य प्राप्त करें।

-धनराशि भेजने हेतु बैंक का नाम व पता एवं खाता संख्या-

इण्डियन ओवरसीज बैंक
शाखा युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, जयसिंहपुरा, मथुरा
I F SC Code- I OB A 0001441 'सत्य प्रकाशन' खाता संख्या- 144101000002341

www.thearyasamaj.org

माता शेरां वाली और भगवती जागरण

न सोना न सोने देना

लेखकःस्वामी अखण्डमण्डनानन्द

उत्तरी भारत के बहुत से नगरों में कई लोग समय-समय पर भगवती पूजन, कीर्तन एवं जागरण का आयोजन करते रहते हैं। वे बड़े-बड़े सुन्दर सामयाने लगाते हैं। नई-नई दरियां और कालीन बिछाते हैं और रंग-बिरंगी झण्डियों एवं बिजली के बल्वों से पंडाल को सजाते हैं। जो भजन मण्डली कीर्तन करने के लिये रात्रि को आती है वह सैकड़ों रुपये दक्षिणा ले जाती है। यह लोग साधारण पढ़े-लिखे होते हैं। कभी पंजाबी में और कभी हिन्दी में बोलते हैं। वे माईक्रोफोन लगाकर और सारी रात शोर मचाकर किसी को सोने नहीं देते। जो व्यक्ति अस्वस्थ हो, या किसी छात्र अथवा छात्रा ने अगले दिन परीक्षा देनी हो उन्हें सारी रात बड़ा कष्ट होता है। जिस स्थान विशेष पर कीर्तन होता है उसके चहुं ओर लगभग एक वर्ग मील क्षेत्र में रहने वाले लोगों को बड़ी असुविधा होती है। वे सारी रात जागते रहते हैं और मन ही मन कीर्तन करने वालों को कोसते रहते हैं, किन्तु उनके विरुद्ध कुछ भी नहीं कर सकते, क्योंकि सरकार किसी के पंथ, मत एवं मजहब में हस्तक्षेप नहीं करती। चाहे तो कोई निर्लज्ज व्यक्ति बाजारों और गलियों में नागा साधुओं के जलूस निकालें, चाहे कोई धर्मान्ध जाति अपने उपास्य देव को प्रसन्न करने के लिये एक ही दिन में लाखों मूक, निरपराध एवं परम उपयोगी पशुओं (गाय, भैंस, भेड़, बकरा आदि) की हत्या कर दे और चाहे कोई मूर्ख समुदाय अपने पर्व के बहाने एक ही रात्रि में करोड़ों रुपये की लकड़ियां फूंक दे, भले ही उसके लिये सड़कों पर खड़े हुये सरकारी वृक्ष ही क्यों न काटने पड़ें। सरकार ऐसे अवसरों पर सदा मौन साध लेती है जिसके कारण बुद्धिहीन लोगों को मनमानी करने का सुअवसर मिल जाता है।

देवी माता का प्रचार

एक बार मेरे एक पड़ौसी ने भगवती पूजन, कीर्तन एवं जागरण का आयोजन किया। उसने बड़े सुन्दर 'निमन्त्रण-पत्र' प्रकाशित कराये और एक मुझे भी भेजा, किन्तु मैं उस कार्य को पाप एवं पाखण्ड समझकर नहीं गया और सारी रात शोर के कारण सो भी न सका अपितु अपने बिस्तर पर पड़ा करवटें बदलता रहा और कीर्तन करने वालों की बातें भी सुनता रहा। मण्डली ने लगभग दस बजे कीर्तन प्रारम्भ किया और उसके प्रमुख वक्ता एवं गायक ने सर्वप्रथम यह कथा सुनाई-

'एक बार जब पार्वती स्नान करने लगी तो उन्होंने अपने शरीर में से कुछ मैल उतारी और उसका पुतला बनाया। तत्पश्चात् उसमें प्राण डालकर और उसे एक बालक का रूप देकर यह आदेश दिया कि तू द्वार पर बैठ जा। जब तेरे पिता महादेव जी कैलास से वापिस आएं तो उन्हें द्वार पर यह कह कर

www.thearyasamaj.org

रोक देना कि कि 'माता जी अन्दर स्नान कर रही हैं। अत: आप थोड़ी देर यहीं ठहरें।' बच्चा तथास्तु यह कहकर द्वार पर जा बैठा। जब महादेव जी आये तो बच्चे ने उन्हें यही बात कही। महादेव जी ने यह समझकर कि हमारे तो कोई बच्चा है ही नहीं उसे मिथ्यावादी कहा और उसका सिर काट दिया। जब घर के अन्दर जाकर पार्वती जी को इस घटना का समाचार दिया तो वह फूट-फूटकर रोने लगी। इस पर महादेव जी यह कहकर कि वह उसे फिर जिला देंगे बाहर आ गये। बालक का कटा हुआ सिर न मिलने के कारण उन्होंने आते हुए एक हाथी का सिर काट लिया और बच्चे के शरीर पर जोड़ दिया जिस पर वह बालक उठकर खड़ा हो गया। जब उसे पार्वती के पास ले गये तो उसने पूछा कि आपने इसे क्या बना दिया है? महादेव जी ने उत्तर दिया कि हमने इसे देवता बना दिया है और इसका नाम गणेश जी रखा है। आज के बाद जब किसी स्त्री अथवा पुरुष का विवाह होगा तो सर्वप्रथम इस देवता की पूजा की जायेगी। तत्पश्चात् विष्णु भगवान, ब्रह्माजी और नारद मुनि आदि देवता महादेव जी के घर आ गये और उन्हें बधाई देने लगे इत्यादि।'

जिस व्यक्ति ने इस प्रकार के कीर्तन का आयोजन किया था, उसके एक पुत्र से दूसरे दिन मैंने पूछा कि क्या किसी व्यक्ति के शरीर से इतना मैल उतर सकता है जिससे एक पुतला बन जाये? क्या उस पुतले में प्राण डालकर उसे मनुष्य का रूप दिया जा सकता है? पार्वती जी ने तो यह चमत्कार दिखाया कि अपने शरीर के मैल से एक बालक उत्पन्न कर दिया, किन्तु महादेव जी (जिन्हें आप ईश्वर मानते हैं) को इस बात का पता ही न लगा कि उनकी पत्नी ने किस प्रकार एक बालक उत्पन्न किया। यदि कोई हिंसक पशु बालक का कटा हुआ सिर उठाकर ले गया था तो क्या महादेव जी अपनी पत्नी के सदृश अपने शरीर से कुछ मैल उतारकर मृत बालक के नये सिर का निर्माण नहीं कर सकते थे? यदि कर सकते थे तो एक निर्दोष एवं निरपराध पशु की हत्या करने की उन्हें क्या आवश्यकता थी? यदि नहीं कर सकते थे तो सर्वशक्तिवान एवं सृष्टिकर्ता प्रभु कैसे बने? सबसे अधिक विचारणीय बात यह है कि हाथी का गला तो लगभग दो फिट चौड़ा होता है। वह एक नवजात बालक के गले पर (जो केवल तीन चार इंच चौड़ा होता है) कैसे जुड़ गया? क्या श्री महादेव जी के घर में कोई स्नानागार (Bath Room) नहीं था? यदि था तो फिर पार्वती जी को बाहर नहाने, अपने शरीर के मैल से एक बालक उत्पन्न करने और उसे द्वार पर बैठाने की क्या आवश्यकता थी? यदि स्नानागार नहीं था तो मानना पड़ेगा कि महादेव जी एक साधारण एवं निर्धन व्यक्ति थे न कि सृष्टिकर्त्ता प्रभु! वह युवक मेरी किसी भी बात का यथार्थ उत्तर न दे सका और मुस्कराता हुआ अपने घर चला गया।

तारा की कथा

यहाँ मेरठ के एक युवक ने एक पुस्तिका 'तारा की कथा' प्रकाशित कराई है जिसमें कई प्रकार की मिथ्या अनर्गल, मन घड़न्त एवं कपोल कल्पित बातें लिख दी हैं। उदाहरण के रूप में कुछ विशेष बातें इस

www.thearyasamaj.org

प्रकार हैं–

मां जगदम्बे महामाया का एक परम भक्त था जिसका नाम ध्यानु था। वह हर वर्ष हजारों नर–नारियों के साथ मां का दर्शन करने को मां के दरबार में जाता था।'। (पृ0 9)

'एक बार अकबर के समय में जब वह दिल्ली से गुजर रहा था तो उसे अकबर ने पकड़वा लिया और ध्यानु भक्त को यह हुकम दिया यदि तेरी मां जिसकी तू पूजा करता है इतनी सच्ची है तो मैं अपने घोड़े का शीश काटता हूँ अगर वह शीश जुड़ गया अर्थात् धड़ से लग गया तो मैं तेरी मां को मानूंगा और तुझे आजाद कर दूंगा अन्यथा तुझे साथियों समेत यहीं पर सड़–सड़ कर मरना होगा।'' (पृ0 10)

''मां ने अपने भक्त की पुकार को सुना और कुछ ही क्षण में अकबर के घोड़े के कटे हुए शीश को धड़ के साथ लगा दिया गया अर्थात् उसका घोड़ा जीवित हो उठा। राजा अकबर यह सब देखकर आश्चर्य चकित रह गया और उसी समय बजीर को बुलाकर हुक्म दिया कि इन सभी को रिहा कर दो और हमारी मां के दरबार में चलने की तैयारी की जाये।' (पृ0 10)

''वह मां के भवन गया और दर्शन करते समय सवा मन सोने का छत्र चढ़ाया। जब अकबर भवन से बाहर आया तो उसने जितनी भी जनता मां के दर्शन को आई थी सभी से यह कहा कि देखो आज तक ऐसा कोई भी हिन्दू राजा नहीं जिसने सवा मन सोने का छत्र चढ़ाया हो। राजा के मन में यह अहंकार हो आया था। उसी समय गगन पथ से आवाज आई–हे मूर्ख राजा! तूने घमण्ड किया है इसलिए तू पीछे मुड़के देख। जब राजा ने पीछे मुड़कर देखा तो वह छत्र ऐसी धातु में परिवर्तित हो गया जिसका आज तक कोई भी पता नहीं लगा पाया।' (पृ0 11)

'एक बार मां गुफा पहाड़ के अपने सेवक लंगर वीर के साथ हस्तिनापुर पहुंची जहां पर उनके परम भक्त पाण्डव रहते थे। उस समय मां ने हस्तिनापुर के एक बाग में डेरा लगा लिया और लंगर को हुक्म दिया कि जाओ पाण्डवों को मेरा हुक्म सुनाओ और कहो मां आयी है दर्शन कर लो। लंगर मां का हुक्म पाकर पाण्डवों के पास पहुंचा और मां का हुक्म जा सुनाया। उस समय पाण्डव कौरवों के साथ जुआ खेलने में मग्न थे। उन्होंने लंगर की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।' (पृ0 12)

'पाण्डवों ने क्रोध में आकर कह दिया मां गुफा पहाड़ से चलकर बाग तक आ सकती हैं तो मां से जाकर कह दो कि हमें दरबार में ही आकर दर्शन दे जाये।' (पृ0 12)

'पाण्डवों के कहे शब्दों को सुनकर मां को बहुत ही क्रोध आया और क्रोध में मां ने पांडवों को शाप दे दिया कि जाओ तुम जुए में सभी कुछ हार जाओगे और अपने साथ द्रौपदी को भी जुए में हार जाओगे। जैसा कि मां ने शाप दिया वैसा ही हुआ। पांडवों ने द्रौपदी समेत अपने को हारा पाया। कौरवों की जीत के पश्चात् दु:शासन को द्रौपदी को भरी सभा में नग्न करने का हुक्म दिया गया तो उस समय अपने को नग्न करने का सुनकर द्रौपदी भगवान कृष्ण को याद करती है कि भगवान जल्द आओ मेरी रक्षा करो। दुष्ट दु:शासन मेरा चीर उतारने को बढ़ रहा है। कुछ ही पल में द्रौपदी की पुकार भगवान कृष्ण तक

www.thearyasamaj.org

पहुंची। उसी समय भगवान कृष्ण ने अरबों–खरबों की तादाद में साड़ियों का ढेर लगा दिया और साड़ियां एक दूसरे के साथ बंध गयीं। दु:शासन साड़ी उतारता खींचता थक गया लेकिन द्रौपदी नग्न न हो पायी। उस समय पाण्डवों समेत द्रौपदी को 12 साल का वनवास हो गया।' (पृ० 13)

'अन्त में भीमसेन योद्धा ने एक त्रिकोना पहाड़ उठाकर त्रिकोना भवन तैयार कर दिया। रात को यज्ञ की तैयारियां शुरू की गयीं। यज्ञ में सभी देवी देवताओं को निमन्त्रण दिया गया और यज्ञ सम्पूर्ण के समय मां ने पाण्डवों को दर्शन देकर उनके कष्टों को दूर किया।' (पृ० 14)

'बड़ी बहन का जन्म राजा स्पर्श के घर में हुआ जहां उसका नाम तारा रखा गया। कुछ समय बीत जाने पर राजा स्पर्श के यहां दूसरी कन्या का जन्म हुआ। उस समय ज्योतिषियों ने अपनी पोथी–पत्री खोलकर बताया कि कन्या के ग्रह इन महलों के लिये ठीक नहीं हैं अर्थात् इसका पालन–पोषण यहां पर नहीं लिखा हुआ।' (पृ० 17)

'राजा ने ज्योतिषियों के कहे अनुसार एक लकड़ी का सन्दूक मंगवाकर उसमें कन्या के लालन–पालन के लिये हीरे जवाहरात भरकर कन्या को भी सन्दूक में रखकर रात्रि के समय में उस सन्दूक को नदी में बहा दिया।' (पृ० 17)

'उसी समय वह भंगी कन्या तथा सामान को लेकर अपनी स्त्री के पास आया और कहने लगा कि तेरे तो कोई औलाद नहीं है यह कन्या हमें दरिया बादशाह (भगवान) ने बख्शी है उस समय भंगी की स्त्री ने कन्या को अपनी गोद में ले लिया। तभी उसकी आंखों में खुशी के आंसू बहने लगे। उसका नाम रुक्मिणी रखा गया और प्यार से रुको बुलाने लगे।' (पृ० 18)

लेखक के कथनानुसार तारा का विवाह राजा हरिश्चन्द्र से और तारा की छोटी बहन रुकमणी का विवाह राज घराने के एक भंगी के पुत्र के साथ हुआ था।

"एक दिन तारा ने रुकमणी को अपने पास बुलाकर उसे कहा कि आज इस मन्दिर में जागरण होना है। रात को भगत मण्डली आकर जागरण करेगी इसलिए तू आज प्रेम से सेवा कर और रात को भी यहां आना। उसी समय रुकमणी सेवा में लग गई।" (पृ० 19, 20)

"थोड़ी ही देर में एक भगत बाहर आया तो रुकमणी ने उससे पूछा जिसका तुम रात भर बैठकर भजन करते हो वह तुम्हारे कौन से मनोरथ पूर्ण करती है। उस भगत ने बताया ये जो मां है जिसका हम सारी रात भजन करते हैं वह मां जिसके घर कोई औलाद नहीं होती उसे औलाद देती है। निर्धन को धन तथा बहनों को भाई और वह निराशों की आस पूरी करती है। तो उस समय रुकमणी की जेब में दो पैसे का टका था। उस भगत को देकर कहा कि मेरे पास तो कुछ नहीं यह टका है इसकी अरदास् कर दो कि यदि मेरे यहां लड़का हुआ तो मैं भी अपने घर में मां का जागरण रचाऊंगी। भगतों ने मिलकर उसी समय रुकमणी की अरदास की।" (पृ० 20)

–(शेष अगले अंक में)

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज सान्ताक्रुज वर्ष – 2017 के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती हैं।

(1) **वेद–वेदांग पुरस्कार:–** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद–वेदांगों पर अनुसंधान किया हो एवं ग्रन्थ लिखे हों इस पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया जायेगा।

(2) **वेदापदेशक पुरस्कार:–** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त आर्य समाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में सेवा की हो उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

(3) **श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार:–** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्यसमाज की अधिकतम सेवा की हो। जिनके प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्यसमाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धान्त अथवा आर्य महापुरुषों के जीवन आदि से हैं। उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

(4) **श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार:–** जिस विदुषी ने जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया हो ऐसी महिला विदुषी–कार्यकर्त्री को पुरस्कृत किया जायेगा।

(5) **पं0 युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार:–** ऐसे विद्वान को सम्मानित किया जायेगा जो आर्ष पाठ विधि से विद्याध्ययन करके स्नातक होकर कम से कम विगत् 10 वर्षों से किसी निजी या सरकारी शिक्षण संस्थाओं में सर्विस न करके आर्ष पाठ विधि से अध्ययन–अध्यापन के लिये गुरुकुल में या स्वतंत्र रूप से संलग्न है, वह इस पुरस्कार के पात्र होंगे।

(6) **श्रीमती कृष्ण गांधी आर्य युवक पुरस्कार:–** ऐसे नवयुवक कार्यकर्ता को जिसने ऋषि दयानन्द के विचारों व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिये रचनात्मक कार्य किया हो उन्हें सम्मानित किया जायेगा। नवयुवक की आयु 30 से 45 वर्ष के मध्य होनी चाहिये।

(7) **श्री राजकुमार कोहली वरिष्ठ विद्वान पुरस्कार:–** ऐसे वयोवृद्ध विद्वान् जिसने जीवन पर्यन्त वैदिक सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज के लिये अपना जीवन समर्पित किया है उन्हें यह पुरस्कार दिया जायेगा।

(8) **श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार:–** ऐसी एक युवा महिला कार्यकर्ता जिसने ऋषि दयानन्द के विचारों व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिये रचनात्मक कार्य किया हो। यह पुरस्कार दिया जायेगा।

(9) **श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार:–** ऐसा गुरुकुल जिसमें आर्ष पाठ विधि से छात्र–छात्राओं को शिक्षा दी जाती हो। जिस गुरुकुल में कम से कम 25 छात्र–छात्राएँ आवासीय शिक्षा ग्रहण करती हो। गुरुकुल को आर्यसमाज से अनुदान की आवश्यकता हो। जिस गुरुकुल में भवन निर्माण का कार्य चल रहा हो। गुरुकुल में साहित्य वृद्धि अथवा अन्न, वस्त्रादि के सहायता निमित्त यह पुरस्कार दिया जायेगा।

(10) **श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार:–** गुरुकुल में आर्ष पाठ विधि से छात्र–छात्राओं को शिक्षा दी जाती हो। जिस गुरुकुल में कम से कम 25 छात्र–छात्राएँ आवासीय शिक्षा ग्रहण करती हो।

www.thearyasamaj.org

गुरुकुल को आर्यसमाज से अनुदान की आवश्यकता हो। जिस गुरुकुल में भवन निर्माण का कार्य चल रहा हो। गुरुकुल में साहित्य वृद्धि अथवा अन्न, वस्त्रादि के सहायता निमित्त। यह पुरस्कार दिया जायेगा।

(11) **श्रीमती शिवराजवती आर्या बाल पुरस्कारः–** आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त कर रहे भारतवर्ष में सर्वप्रथम आये किन्हीं दो (योग्यतम) छात्र–छात्राओं को यह पुरस्कार राशि दी जायेगी।

(12) **श्री हरभगवानदास गांधी मेधावी छात्र पुरस्कारः–** ऐसे छात्र जो वेद विषय पर पी.एच.डी. कर रहा हो या महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित विश्वविद्यालय में संस्कृत में प्रथम आया हो उसे यह पुरस्कार दिया जायेगा।

(13) **स्व0 आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान पुरस्कारः–** जिस युवा विद्वान ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्यसमाज की सेवा करने का संकल्प लिया है। उन्हें यह पुरस्कार दिया जायेगा।

(14) **स्व0 नारायणदास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कारः–** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद के प्रचार हेतु अधिकतम सेवा की हो। उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

(15) **कैप्टन देवरत्न आर्य संगठनवीर पुरस्कारः–** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के संगठन के लिये अधिकतम सेवा की हो। उन्हें यह पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

विशेष: दिनांक 31.10.2016 तक प्रविष्टियां आर्यसमाज सान्ताक्रुज के कार्यालय में पहुंच जानी चाहिये। **कार्यालय का पता– आर्यसमाज सान्ताक्रुज,** विटठलभाई पटेल मार्ग (लिंकिंग रोड), सान्ताक्रुज (प.) मुम्बई–400054, फोन नं. 2660 2800/2293 1518

महापुरुषों की जयन्ती

भाई परमानन्द	4 नवम्बर
चितरंजनदास	5 नवम्बर
विपिन चन्द्रपाल	7 नवम्बर
सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	10 नवम्बर
गुरूनानक	14 नवम्बर
जवाहरलाल नेहरू	14 नवम्बर
इन्दिरा गांधी	19 नवम्बर
रानी लक्ष्मीबाई	19 नवम्बर
वीरांगना झलकारीबाई	22 नवम्बर
पट्टामी सीतारमैया	24 नवम्बर

महापुरुषों की पुण्यतिथि

विनोबा भावे	15 नवम्बर
नाथूराम गोडसे	15 नवम्बर
महात्मा हंसराज	15 नवम्बर
शहीद करतारसिंह	16 नवम्बर
लाला लाजपतराय	17 नवम्बर
वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र वसु	23 नवम्बर
गुरू तेगबहादुर	24 नवम्बर
महात्मा जोतिबा फुले	28 नवम्बर

1 नवम्बर	भाई दौज
7 नवम्बर	विश्व सुरक्षा दिवस
14 नवम्बर	बाल दिवस
24 नवम्बर	एन.सी.सी. दिवस

www.thearyasamaj.org

वह प्राणिमात्र का हितैषी है और ये हित बिना सत्य के नहीं हो सकता। सत्य का यथार्थ प्रकाश परमात्मा प्रत्येक आत्मा में बड़ी सरलता से अविरल भाव से करता है। इस बात को सत्यान्वेषी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बड़ी प्रबलता से कहा है कि मनुष्य का आत्मा सत्य और असत्य को जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह और अविद्या आदि दोषों से सत्य को छोड़कर असत्य की ओर झुक जाता है।

महर्षि दयानन्द का सदा ही मानना था कि व्यक्ति समाज या राष्ट्र चाहे कितना ही सम्पन्न क्यों न हो चाहे कैसी भी योजनायें बना ली जाये, चाहे जैसे शिक्षा के लिये उत्तम व्यवस्थायें कर ली जायें भौतिक सुविधा के कितने भी साधन जुटा लिये जायें लेकिन वह उन्नति जिसको प्राप्त कर समस्त संसार आनन्द मग्न हो जाये वह इन साधनों से नहीं हो सकती फिर इस प्रकार की उन्नति कैसे हो सकती है। इसका उपाय कहते हुये वे सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखते हैं कि **जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो सत्य असत्य को मनुष्य जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कार्य नहीं है।** सत्य पथ पर चलते हुये कभी-कभी अनेक कठिनाइयों को देख करके व्यक्ति घबरा जाता है ऐसे व्यक्ति को अपने अनुभवों से आश्वस्त करते हुये महर्षि लिखते हैं कि सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय होता है। सत्य से ही विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश से नहीं हटते। इस प्रकार से हम देखते है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती में एक वीर योद्धा की तरह आजीवन सत्य की स्थापना के लिये विकट संघर्ष किया। असत्य की घोर अंधियारी में अपना जीवन दीप जलाकर चहुं ओर सत्य का प्रकाश किया। इनकी इस तपस्या के परिणामस्वरूप अनेकों आर्यसमाजों, गुरुकुलों, विद्यालयों के द्वारा करोड़ों व्यक्तियों को सत्य पथ मिला। अनेकों पतित आत्माओं ने पतन के गहरे गर्त से निकलकर अपने जीवनों को धन्य किया। इसी पथ पर चलते हुये संसार का कल्याण करते अपने महान जीवन का उत्सर्ग कर दिया। दीपावली का वह दुर्भाग्यशाली दिवस था जिस दिन वह वेदज्ञान का सूर्य सत्य का प्रकाश करते-करते अस्त हो गया। आज उनके निर्वाण दिवस पर हम सब जो भी महर्षि के उपकारों से उपकृत होकर अपने जीवन को यत् किंचित भी धन्य किया है सब मिलकर महर्षि के इस पावन उद्देश्य को आगे बढ़ायेंगे इसी में अपना और जगत् का कल्याण निहित है। इस पवित्र कार्य से विमुख होना ऐसे है मानो अमृत घट से मुंह फेर लेना। गोस्वामी तुलसीदास ने ठीक ही लिखा है कि-

नरतन पाय विषय मन देंही।
पलट सुधा शठ ते विष लेहीं।।

अन्त में महर्षि निर्वाण दिवस पर कविवर लाखनसिंह भदौरिया की यह भाव भरी कविता पाठकों को समर्पित करता हूं जिससे वे महर्षि को गहराई से समझ सकें।

कितना बड़ा स्वप्न देखा था, कितने बड़े सत्य से दृग से।
इस जग की संकीर्ण परिधि में, समा सका कब सत्य तुम्हारा,
समाधिस्थ होकर शिवत्व में, जो तुमने शुभ स्वप्न निहारा,
उसका ही प्रतिदान, गरल के प्याले, पाये तुमने जग से।।
कितना बड़ा स्वप्न देखा था, कितने बड़े सत्य से दृग से।।

सीमाओं में बंध न सकी थी, क्रान्ति-दर्शिनी दृष्टि तुम्हारी,
ओ भविष्य के दृष्टा तुमने ही हिरण्मय किरण उतारी,
आज उसी आलोक रश्मि से, लोक-प्राण दिखते जगमग से।।
कितना बड़ा स्वप्न देखा था, कितने बड़े सत्य से दृग से।।

आदि सृष्टि का ज्ञान संजोकर, तममय वर्तमान से पहले,
मानवता का लिये सोमघट, तुम निकले विहान से पहले,
अन्ध दृष्टि पहचान न पायी, तुम आये आगम के मग से।।
कितना बड़ा स्वप्न देखा था, कितने बड़े सत्य से दृग से।।

कितनी बड़ी देन लाये तुम, कितना बड़ा अभाव खला था,
मानवता को मुक्ति दिलाने, पहला मुक्त पुरुष निकला था,
इस धरती का विस्तृत प्रांगण, जिसने नाप लिया दो डग से।।
कितना बड़ा स्वप्न देखा था, कितने बड़े सत्य से दृग से।।

कण-कण की सीमित क्षमतायें, कर न सकीं विराट का दर्शन,
चित्र स्वयं बन गया चितेरा, कौन करे चिति का चित्रांकन,
कैसे नाप सकेगा उसको जग, बौने विचार के पग से।।
कितना बड़ा स्वप्न देखा था, कितने बड़े सत्य से दृग से।।

❀❀❀

www.thearyasamaj.org

'तपोभूमि' नवम्बर 2016 R.N.I. No. 2321/57 रजि. सं. MTR नं. 04/2016-18

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण (सजिल्द)	220.00	भ्रांति दर्शन	20.00
शुद्ध रामायण (अजिल्द)	170.00	दयानन्द और विवेकानन्द	15.00
शंकर सर्वस्व	120.00	इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ	12.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00	बाल मनुस्मृति	12.00
नारी सर्वस्व (प्रेस में)		ओंकार उपासना	12.00
शुद्ध कृष्णायण	50.00	शुद्ध सत्यनारायण कथा	10.00
शुद्ध हनुमच्चरित	60.00	दादी पोती की बातें	10.00
विदुर नीति	40.00	क्या भूत होते हैं	10.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00	आर्यों की दिनचर्या	10.00
चाणक्य नीति	40.00	महाभारत के कृष्ण	8.00
महाभारत के प्रेरक प्रसंग	40.00	ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00
वेद प्रभा	30.00	सच्चे गुच्छे	8.00
शान्ति कथा	30.00	मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00
नित्य कर्म विधि	30.00	वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00	गायत्री गौरव	5.00
यज्ञमय जीवन	30.00	महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
दो बहिनों की बातें	30.00	सफल व्यक्तित्व	5.00
दो मित्रों की बातें	30.00	सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	5.00
चार मित्रों की बातें	20.00	मुक्ति प्रदाता त्रिवेणी	5.00
भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	20.00	जीजा साले की बातें	5.00
मील का पत्थर	20.00	भारत और मूर्ति पूजा (प्रेस में)	

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2016 के लिये वार्षिक शुल्क 150/– रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/– भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक–पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :–
व्यवस्थापक – कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर– गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबाइल– 9759804182

Yogendra # 9927136600

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए रमेश प्रिन्टिंग प्रेस, पंचवटी, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित